पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

वैशाख-ज्येष्ठ, कलियुगाब्द 5120, मई, 2018

हमें आज़ादी कब मिलेगी ?

विकास की राह पर शिखर की ओर हिमाचल

नई सोच नई पहल के सौ दिन

प्रमुख उपलब्धियाँ

- सामाजिक सुरक्षा पेंशन के अंतर्गत बिना आय सीमा के वृद्धावस्था पेंशन प्राप्त करने की आयु सीमा 80 वर्ष से घटाकर 70 वर्ष की, हज़ारों वृद्धजन लाभान्वित।
- 5 स्वास्थ्य उप–केंद्रों में टेली–मेडिसन सुविधा और 101 आयुर्वेदिक स्वास्थ्य संस्थानों में योग क्लीनिक आरम्भ।
- उद्योग विभाग के खनन तथा स्टार्ट–अप पोर्टल का शुभारम्भ, सभी आवश्यक दस्तावेज ऑनलाइन जमा करने की सुविधा।
- राज्य में सड़कों के रख–रखाव व टारिंग के कार्य के लिए 200 करोड़ रू. की राशि जारी।
- हिमाचल नम्बर के छोटे वाहनों को बैरियरों पर प्रवेश शुल्क की छूट।
- 200 पयेजल आपूर्ति योजनाओं का कार्य शीघ्र पूरा करने के लिए राज्य सरकार ने जारी की 15 करोड़ रुपये की धनराशि।
- प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत आवासीय सुविधा प्रदान करने के लिए 42 नगरों में पात्र लाभार्थी चयनित किए गए।
- प्रदेश की 20 नगर परिषदों को नगर नियोजन के अंतर्गत नक्शे पास करने की शक्तियां प्रदान।
- 2001 मैगावाट क्षमता की 31 पन विद्युत परियोजनाओं के लिए अंतरराष्ट्रीय निविदाएं आमंत्रित।
- प्रदेश के लगभग 300 संवेदनशील एच.आई.वी. पीड़ित बच्चों को मुफ्त पौष्टिक आहार देने की व्यवस्था आरम्भ।
- ग्राम पंचायतों में सभी परिवार रजिस्टर और कैश बुक ऑनलाइन किए। सहकारी समाओं के पंजीकरण और रिकॉर्ड के रख–रखाव के लिए सॉफ्टवेयर किया तैयार।
- 4101 नये अभ्यर्थियों को कौशल विकास भत्ता तथा 1737 युवाओं को बेरोज़गारी भत्ता दिया गया।
- खनन नीति का सरलीकरण किया और अवैध खनन पर सख्त दण्ड का प्रावधान।
- अनुबंध आधार पर नियुक्त महिला कर्मचारियों का मातृत्व अवकाश 135 से बढ़ाकर 180 दिन किया।
- आयुर्वेदिक चिकित्सा अधिकारियों के 200 पद भरने की प्रक्रिया आरम्भ।
- महिला सुरक्षा के लिए गुड़िया हैल्पलाइन टोल फ्री नं. 1515 और शक्ति बटन ऐप आरम्भ।
- सड़क निर्माण के लिए 123 डी.पी.आर. तैयार, 213 कार्य निष्पादन के लिए सौंपे गए। 43 राष्ट्रीय राजमार्गों हेतु सड़क परामर्शदाताओं की सेवाएं लेने के लिए पत्र जारी।
- जन सुविधा के लिए इलैक्ट्रिक बसें और इलैक्ट्रिक टैक्सियां आरंभ, आरटीओ कार्यालयों में ऑनलाइन व डिजिटल भुगतान की सुविधा आरंभ।
- सिराज क्षेत्र में वंचित बस्तियों को पेयजल उपलब्ध करवाने हेतु 41 करोड़ रूपये की घोषणा।
- सिंगल विंडो के तहत 456.43 करोड़ रू. निवेश की 17 औद्योगिक इकाइयों को स्वीकृति प्रदान।
- मुख्यमंत्री द्वारा कल्याण योजनाओं की ऑनलाइन निगरानी के लिए 'सी.एम. डैशबोर्ड' आरम्भ।
- 'मेरा हिमाचल, स्वच्छ हिमाचल' अभियान के अंतर्गत 9085 पारम्परिक जल स्रोत व 14116 पानी के टैंक साफ किए गए।
- पहली बार टेपरा, द्योथल, जंजैहली, कामरू तथा चरू पाँच पर्यावरण गांव स्थापित करने की योजना आरम्भ, प्राकृतिक संसाधनों का न्यायसंगत दोहन होगा सुनिश्चित।
- शिमला शहर के ग्रिड से जुड़े पहले 35 किलोवाट सौर ऊर्जा संयंत्र का शुभारम्भ, आगामी 25 वर्षों में होगी 97 लाख रू. की बचत।
- 25 सेवाओं के लिए सीधा लाभ हस्तांतरण सेवा तथा आंगनबाड़ियों के लिए मोबाइल ऐप आरम्भ।
- ताल, हमीरपुर में 3.25 करोड़ रूपये की लागत से तरल नाइट्रोजन संयंत्र, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत स्थापित।
- 108 बाइक एम्बुलेंस सेवा आरम्भ। हिमाचल यह सेवा आरम्भ करने वाला उत्तरी भारत का पहला राज्य बना।
- उड़ान - II के अन्तर्गत प्रदेश में 5 हैलीपैड के निर्माण के लिए डी.जी.सी.ए., पवन हंस तथा पर्यटन विभाग की संयुक्त टीम द्वारा व्यवहारिकता सर्वेक्षण किया गया।
- वन व खनन माफिया से कड़ाई से निपटने के लिए होशियार सिंह हैल्पलाइन टोल फ्री न0. 1090 आरम्भ की गई।
- 98 कि.मी. मोटर योग्य सड़कें बनाई गईं तथा 212 कि.मी. सड़कों पर क्रॉस ड्रेनेज सुविधा प्रदान।
- जापान की अन्तरराष्ट्रीय सहयोग एजेंसी द्वारा हिमाचल के लिए 800 करोड़ रू. की वन प्रबंधन एवं आजीविका सुधार योजना स्वीकृत।
- सरदार वल्लभ भाई पटेल क्लस्टर विश्वविद्यालय विधेयक को मंजूरी, 55 करोड़ रू. होंगे खर्च, एम.एल.एस. महाविद्यालय, सुन्दरनगर में किया शिलान्यास।
- चालू 61 पेयजल योजनाओं का कार्य पूरा करने के लिए अतिरिक्त धन उपलब्ध करवा कर कार्य पूरा किया, 630 बस्तियों की 1 लाख से अधिक जनसंख्या लाभान्वित।
- कर्मचारियों व पेंशनधारकों को 700 करोड़ रुपये के वित्तीय लाभ दिए।
- मण्डी ज़िला के जंजैहली में पर्यटन सांस्कृतिक केन्द्र तथा थुनाग में ट्रैक्स होस्टल के लिए ए.डी.बी. द्वारा 27 करोड़ रुपये स्वीकृत।
- मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए 'नील क्रांति' के तहत 80 नई ट्राऊट इकाइयां स्थापित।
- एस.एम.सी. शिक्षकों को एक साल का सेवा विस्तार व मानदेय में 20 प्रतिशत की बढ़ोतरी, 2630 एस.एम.सी. शिक्षक लाभान्वित।
- कृषक बकरी पालन योजना के तहत 200 बकरी इकाइयाँ स्थापित व बी.पी.एल. किसानों को 60 प्रतिशत सब्सिडी पर प्रदान की।
- सिद्धबाड़ी, नाहन, सुंदरनगर और शमशी में शहरी आजीविका केंद्रों का निर्माण कार्य शुरू।

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश

येन बद्धो बलीराजा दानवेन्द्रो महाबल
तेन त्वान अनुबद्धनामि रक्षे माचलमाचलः

जिस प्रकार रक्षासूत्र से दानवीर राजा बलि को बांधकर उनकी रक्षा हुई थी उसी प्रकार हम भी आपस में परस्पर एक दूसरे को रक्षासूत्र बांधकर रक्षा का वचन लें।

वर्ष : 18 अंक : 8

मातृवन्दना

श्रावण-भद्रपद, कलियुगाब्द 5120, अगस्त 2018

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक
वासुदेव शर्मा

✡

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
डॉ॰ अर्चना गुलेरिया
नीतू वर्मा

✡

पत्रिका प्रमुख
राजेन्द्र शर्मा

✡

वितरण प्रमुख
जय सिंह ठाकुर

✡

प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन,
नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990

e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, Pl-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

प्राचीन भारत: स्वतन्त्र भारत

देवानाम् प्रिय भारतभूमि का आकर्षण अद्वितीय है। हमारी दिव्य मातृभूमि विविध प्राकृतिक सम्पदाओं का अक्षय भण्डार है यहां संसाधनों की कमी नहीं। अन्तरिक्ष अनुसन्धान का क्षेत्र हो या परमाणु उर्जा एवं प्रक्षेपास्त्र निर्माण, भारत महाशक्ति के रूप में उभर कर सामने आ रहा है तेजगति से बढ़ने वाली आर्थिक व्यवस्था देश को मजबूती प्रदान कर रही है। ये सब सफलताएं प्राप्त करते हुए भी हम वैश्विक दौड़ में काफी पीछे चलकर आगे बढ रहे हैं यह नैतिकता एवं राष्ट्रनिष्ठा उसका सबसे बड़ा कारण है। भ्रष्टाचार की जड़ें समाज मे काफी गहराई तक पहुंच चुकी हैं। आतंकवाद और नक्सलवाद से कुछ राज्य ग्रसित हैं। राजनीतिक अस्थिरता प्रायः बनी रहती है। राष्ट्रीय चरित्र हमारा अभी नहीं बन पाया। अतएव क्षणिक सुख के मोह के कारण निंद्रा में फंसे भारत वासियों को अब जागना होगा। प्राचीन भारत से प्रेरणा एवं सीख लेकर स्वतन्त्र भारत को संवारना होगा।

सम्पादकीय	प्राचीन भारत: स्वतंत्र भारत	3
प्रेरक प्रसंग	प्रसिद्ध बांसुरी वादक हरिदत्त भारद्वाज	4
चिंतन	विश्व को भारत की अद्‌भुत देन है धर्म	5
आवरण	आजादी के बाद हमने क्या पाया, क्या खोया	6
संगठनम्	गोवंश संरक्षण को मिले जमीन	10
देश-प्रदेश	सैटेलाइट तस्वीरों से पुख्ता होगी	12
देवभूमि	हर वर्ग के लोगों को मिलेगा गृहिणी सुविधा	14
पुण्य जयंती	प्रतापी राजा कृष्णदेव राय	16
घूमती कलम	नाटकों से फिल्मी दुनिया की ओर बढ़ते	17
पूण्य स्मरण	जीवन को सार्थक कर चले गए संघ	18
दृष्टि	तीन साल तक तोड़ा पहाड़	20
काव्य जगत	मंजिल	21
कृषि	सेब फल ही नहीं, किसानों बागवानों के लिए	22
स्वास्थ्य	हमारा भोजन कैसा हो?	23
प्रतिक्रिया	धारा **370** अलगाववादियों का यह 'सुरक्षा कवच'	24
महिला जगत	पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका	25
विविध	***RBI** गवर्नर रहे वाई.वी. रेड्डी की पुस्तक	30
बाल जगत	विनम्रता-दूसरों को छोटा न समझें	31

पाठकीय

सम्पादक महोदय,

मैंने आप को वार्षिक कैलैण्डर के विषय में दिनांक 18-02-2018 को उक सुझाव पत्र लिखा था। मेरे इस पत्र में दिए गए सुझाव को ध्यान में रखते हुए मातृवन्दना प्रबन्धन ने विक्रमी सम्वत् 2075 के मातृवन्दना कलैंडर में कुछ सुधार करते हुए कहीं-2 चन्द्र तिथियों का समाप्ति काल दर्शाया है जिसके लिए मैं मातृवन्दना पत्रिका प्रबन्धन का बहुत ही आभारी हूँ आंशिक रूप से ही सही, मुझ जैसे तुच्छ पाठक के सुझाव को स्वीकारा गया है। मातृवन्दना के 2075 विक्रमी वर्ष के कलैण्डर का संक्षिप्त अध्ययन करने पर कुछ त्रुटियां ध्यान में आईं, जो इस प्रकार हैं:- कलैण्डर में जहाँ-2 भी चन्द्र तिथियों का समाप्ति काल दर्शाया गया है, वह इतना बारीक हैं कि जिसे सहजता से पढ़ा नहीं जा सकता। प्रत्येक चन्द्र तिथि का समाप्ति काल दर्शाया जाना इसलिए आवश्यक है कि लोग अपने स्वर्गीय पारिवारिक सदस्यों का वार्षिक श्राद्ध तथा कई अन्य कार्य भी चन्द्रतिथि अनुसार ही करते हैं। इसलिए यदि वार्षिक कलैण्डर में प्रत्येक चंद्र तिथि का समाप्ति काल दर्शाया गया होता तो यह और ज्यादा उपयोगी सिद्ध होगा। मेरी समझ के अनुसार प्रत्येक चन्द्र तिथि का समाप्ति काल वार्षिक कलैण्डर में पढ़ने योग्य दर्शाने हेतु वर्तमान कलैण्डर का आकार कम है, जिसे बढ़ा कर ठीक किया जा सकता है। मुझे पूर्ण आशा है कि पाठकों के हित को ध्यान में रखते हुए मातृवन्दना प्रबन्धन मेरे इस सुझाव को भविष्य

महोदय,

मातृवन्दना का मई एवं जून का अंक मिला पढ़कर तमाम सामग्री रूचिकर लगी। जून के अंक में देवभूमि के अंतर्गत लेख 'अध्यात्मिक एवं दैवी भावना से ओत-प्रोत हैं नलवाड़ मेले' स्थान देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। जून अंक का संपादकीय 'भारत विभाजन का गुनहगार है जिन्ना' बिल्कुल सही बात है इतिहास साक्षी है कि कुर्सी की लालसा में जिन्ना जैसे लोग इस हद तक गिर गए जिन्हें देश प्यार की परवाह न होकर गद्दारी अच्छी लगी मगर यह भी सत्य है कि हिन्दुस्तान के तमाम मुस्लमानों को पाकिस्तान ले जाने में जिन्ना (मुहम्मद अली जिन्ना) पाकिस्तान का नाम सुझाने वाला उसका अंतरंग साथी रहमत अली ले जाने में असफल रहा और अब्दुल कलाम आजाद जैसे नेक इन्सानों ने मुस्लिम भाईयों के जहन में बंटवारे के दर्द को बिठाया यानि अपना दर्द साझा कर देश प्यार का संदेश देकर लोगों के दिलों में दशभक्ति की रोशनी जगाई ऐसे लोग धन्य हैं जिन्होंने भारत-पाक बंटवारे के खलनायक जिन्ना जैसे एकता के ढोंगी को फूलों का गुलदस्ता नहीं बल्कि हिन्दुस्तान की ओर से लानत भेजी। ❖ **भीम सिंह परदेशी, महादेव, सुन्दरनगर, मण्डी**

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें
0177-2836990, 7650000990
ई-मेलः matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को स्वतन्त्रता दिवस व रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

स्मरणीय दिवस (अगस्त)

कामिका एकादशी	7 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस	15 अगस्त
श्री कल्कि जयंती	16 अगस्त
गोस्वामी तुलसीदास जयंती	17 अगस्त
ईद उल जुहा	22 अगस्त
रक्षा बंधन	24 अगस्त
संस्कृत दिवस	26 अगस्त

प्राचीन भारतः स्वतन्त्र भारत

अतीत को भविष्य की कल्पना का आधार माना जाता है। गौरवमय अतीत की उपलब्धियां उस वर्तमान रूपी वृक्ष की जड़े हैं जो उसे पुष्पित एवं पल्लवित करती हैं, अनन्तर भविष्य में उसको फलदायक बनाती हैं। अतीत व वर्तमान में घटित संकट भरी घड़ियां व भूलें भी सर्वदा स्मरण रहनी चाहिए ताकि भविष्य में उनकी पुनरावृत्ति न हो। जब विश्व पाषाण युग में जी रहा था, तब हमारे ऋषि-मुनियों ने विश्व के प्राचीनतम वैदिक ग्रन्थों की संरचना कर डाली थी और उत्तरकाल में ब्राह्मण ग्रन्थ, कल्पसूत्र, शुल्वसूत्र एवं स्मृति ग्रन्थों के माध्यम से यज्ञसंस्था, ज्ञान-विज्ञान और सामाजिक व्यवस्था को सुदृढ़ एवं सुव्यवस्थित किया था। आरण्यक, उपनिषद एवं षड् दर्शन से आध्यात्म-ज्ञान को इतना विकसित एवं सारगर्भित किया कि सारे विश्व ने भारत से चमत्कृत होकर भारत को अपना विश्व गुरू स्वीकार किया। पौराणिक-ग्रन्थों ने भारत के चक्रवर्ती राजाओं के इतिहास के साथ भारतीय संस्कृति के उज्जवल-पक्ष को उजागर करते हुए नैतिकता को परिपुष्ट किया। रामायण, महाभारत एवं श्रीमद्भागवद्गीता जैसे आदर्श ग्रन्थों को विश्वव्यापी मान्यता मिली। ज्ञान-विज्ञान, साहित्य लेखन में भी भारत अतीत में शिखर पर आरूढ़ था। गणित, रसायन, भौतिकी, भूगोल, अन्तरिक्ष-ज्ञान, ज्योतिष, आयुर्वेद, योगादि विश्व के लिए सर्वप्रथम भारतीयों की ही देन है। अहिंसा एवं परमसत्य का उद्घोष करने वाले बौद्ध, जैन, धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध और महावीर इसी भूमि पर जन्म लिए। अध्यात्म और शौर्य के मिश्रित स्वरूप सिख धर्म के प्रवर्तक गुरू नानक देव एवं गोविन्द सिंह इसी धरती के पुत्र थे।

भारत में अनेक शक्तिशाली एवं चक्रवर्ती राजाओं ने अपने साम्राज्य स्थापित किए। 200 ई.पू0 चन्द्रगुप्त मौर्य ने गुरू चाणक्य की नीति का अनुपालन कर विशाल साम्राज्य की स्थापना की। अनन्तर अनेक प्रतापी राजाओं ने न केवल भारत भूमि पर अपितु विश्व के अन्य भू-खण्डों पर अपने राज्य को और हिन्दु संस्कृति को विस्तारित किया। पृथक-2 राज्यों के रहते हुए भी भारत की चारों दिशाओं में स्थित पुण्य तीर्थों और पवित्र नदियों के प्रति समस्त भारतीयों की समानरूप से आस्था एवं श्रद्धा थी। तीर्थयात्रा एवं अन्त्य-कर्म के निमित्त कोई भी तीर्थयात्री निर्बाध रूप से एक-दूसरे राज्य में जा सकता था। अपने राष्ट्र और राष्ट्रीयता पर आज यदि हम स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करते हैं, तो यह हमारे अतीत के इतिहास और संस्कृति का ही परिणाम है।साथ ही हमें यह शिक्षा भी मिलती है कि पारस्परिक एकता के अभाव में बाह्य शक्तियां किस प्रकार एक समृद्ध देश की स्वतन्त्रता को विनष्ट कर देती हैं। दसवीं शताब्दी के पश्चात् बड़े छोटे राज्यों और रियासतों में परस्पर ईर्ष्या, अहं एवं वैमनस्य भाव ने मुस्लिम आक्रान्ताओं को भारत की सीमाओं को लांघने का सुअवसर प्रदान किया। मुहम्मद बिन कासिम, गजनवी, गौरी जैसे निर्दयी आक्रान्ताओं ने समृद्ध भारत देश की अतुल सम्पदा का हरण किया। हमारे धार्मिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक स्थलों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और आगे चल कर हम उनके गुलाम बन गये। मुसलमानों ने मुगलकाल तक अधिकांश भारत भूमि को अपने अधीन रखा था। अंग्रेजों के आने से पूर्व तक उनका शासन रहा। अंग्रेजों ने भारत को गुलाम बनाने हेतु 'फूट-डालो राज करो' नीति अपनाई। लॉर्ड मैकाले जैसे कूटनीतिज्ञों ने हमारी शिक्षा-पद्धति, रीति-रिवाजों, भाषा तथा संस्कृति सबको बदलने की दुस्चेष्टा की जिसका परिणाम आज हमारे समक्ष है। हम भले ही सन् 1947 के बाद स्वतन्त्र भारत में जी रहे हैं किन्तु मानसिक रूप से आज भी हम अंग्रेजी सभ्यता और भाषा के गुलाम बने हुए हैं। धर्म, क्षेत्र, भाषा और जातियों के आधार पर अंग्रेजों द्वारा बांटा गया भारतीय समाज आज भी सत्तालोलुप राजनेताओं द्वारा और अधिक विभाजित किया जा रहा है। इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत ने बहुत तरक्की की है। विश्व का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक यह देश संसार के गिने चुने शक्तिशाली देशों में से एक है। हर क्षेत्र में भारत समृद्धि पथ पर आगे बढ़ रहा है।

देवानाम् प्रिय भारतभूमि का आकर्षण अद्वितीय है। हमारी दिव्य मातृभूमि विविध प्राकृतिक सम्पदाओं का अक्षय भण्डार है यहां संसाधनों की कमी नहीं। अन्तरिक्ष अनुसन्धान का क्षेत्र हो या परमाणु उर्जा एवं प्रक्षेपास्त्र निर्माण, भारत महाशक्ति के रूप में उभर कर सामने आ रहा है तेजगति से बढ़ने वाली आर्थिक व्यवस्था देश को मजबूती प्रदान कर रही है। ये सब सफलताएं प्राप्त करते हुए भी हम वैश्विक दौड़ में काफी पीछे चलकर आगे बढ रहे हैं यह नैतिकता एवं राष्ट्रनिष्ठा उसका सबसे बड़ा कारण है।

भ्रष्टाचार की जड़ें समाज मे काफी गहराई तक पहुंच चुकी हैं। आतंकवाद और नक्सलवाद से कुछ राज्य ग्रसित हैं। राजनीतिक अस्थिरता प्रायः बनी रहती है। राष्ट्रीय चरित्र हमारा अभी नहीं बन पाया। अतएव क्षणिक सुख के मोह के कारण निंद्रा में फंसे भारत वासियों को अब जागना होगा। प्राचीन भारत से प्रेरणा एवं सीख लेकर स्वतन्त्र भारत को संवारना होगा

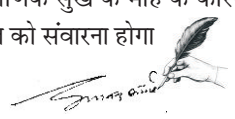

प्रसिद्ध बांसुरी वादक हरिदत्त भारद्वाज

ग्रामीण परिवेश में जिसकी बाल्यकाल और किशोरावस्था बीती हो, दसवीं कक्षा भी स्थानीय विद्यालय में उत्तीर्ण की है, बचपन में ही अपने घर की गाय-बछड़ों को सुबह-शाम चरागाह और वनों में चराते हुए बांसुरी पर सुरीली धुन से पशुधन के साथ अपने होने का अहसास दिलाते हुए जिसका बांसुरी वादन एक..... बन गया है, ऐसा यह युवा हरिदत्त भारद्वाज आज अपने क्लासिकल बांसुरी वादन से देश-प्रदेश में एक ऊंचा नाम अर्जित कर चुका है। शिमला जिला के ठियोग क्षेत्र के अन्तर्गत शरैंया (टियाली) गांव इनका जन्म स्थान है। इनके पिता एक समाज सेवी हैं और कई वर्षों तक स्थानीय पंचायत के प्रधान रह चुके हैं।

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अन्तर्गत सांग एंड ड्रामा डिविजन शिमला में कार्यरत बांसुरी वादक इनके दादा श्री चेतराम शर्मा जी बांसुरी सीखाने में इनके प्रेरक और शिक्षक रहे। सन् 2004 के बाद इन्होंने गुरू शिष्य परम्परा के अनुरूप क्लासिकल बांसुरी वादन सीखना प्रारम्भ किया। इन्होंने भारत के प्रख्यात बांसुरी वादक पं0 रोणु मजूमदार को अपना गुरू धारण किया और कठिन परिश्रम और और रियाज कर बांसुरी वादन में विशिष्टता प्राप्त की। गुरू पं0 रोणु मजूमदार किसी परिचय के मोहताज नहीं। वह उस मेहर घराने से ताल्लुक रखते हैं जिससे पण्डित रविशंकर और उस्ताद अली अकबर खान जैसे महान् संगीतकार विश्व पटल पर उभर कर सामने आएं हैं।

हरिदत्त भारद्वाज ने भी कम उम्र में ही बांसुरी वादन में प्रवीणता हासिल कर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नाम कमाया है। 2008 में इन्हें 'यूथ अवार्ड' प्राप्त हुआ। 2007 में उस्ताद बिस्मिल्ला खां अवार्ड' के लिए भी इनका चयन किया गया। राज्यस्तरीय यूथ फैस्टिवल में लगातार 2001 से 2008 तक इन्होंने आठ स्वर्ण पदक प्राप्त किए। 2005 में पटना में आयोजित ओपन नेशनल यूथ फैस्टिवल में इन्होंने रजत पदक प्राप्त किया। यूरोपीय देशों जैसे इंग्लैंड, नार्वे, जर्मनी, डैन्मार्क आदि में इन्होंने अपनी कला का प्रदर्शन किया है। कनाडा और चीन में भी इन्होंने अपनी प्रस्तुति दी है। 2005 और 2008 में इन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है। आकाशवाणी और दूरदर्शन के यह स्वीकृत कलाकार हैं। संगीत नाटक अकादमी द्वारा नैनीताल में आयोजित युवा महोत्सव 2011 में इन्होंने बांसुरी वादन से दर्शक एवं श्रोताओं को अत्यन्त प्रभावित किया है। हरिदत्त भारद्वाज का मानना है कि अत्यन्त व्यस्तता के रहते हुए भी वह उम्र भर अपने गुरू से बांसुरी वादन में शिक्षा ग्रहण करते रहेंगे। ❖

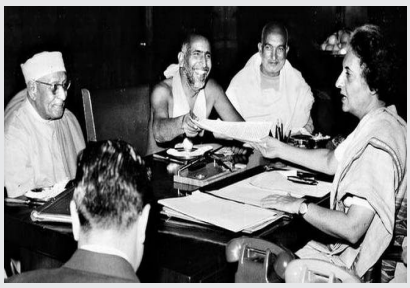

सादगी

गुरुकुल घरोंडा के एक आचार्य स्वामी रामेश्वरानंद थे। वे जनसंघ के टिकट पर करनाल से सांसद बन गए, तो उन्होंने सरकारी आवास नहीं लिया और बाजार सीताराम, दिल्ली-6 के आर्य समाज मंदिर से संसद तक पैदल जाया करते थे कार्रवाई में भाग लेने। वे ऐसे पहले सांसद थे, जो हर सवाल पूछने से पहले संसद में एक वेद मंत्र बोला करते थे, वे सब वेदमंत्र संसद की कार्रवाई के रिकार्ड में देखे जा सकते हैं। उन्होंने एक बार संसद का घेराव भी किया था, गोहत्या पर बंदी के लिए....

एक बार इंदिरा जी ने किसी मीटिंग में उन्हें पांच सितारा होटल में बुलाया। वहां जब लंच चलने लगा तो उन्होंने अपनी जेब से लपेटी हुई बाजरे की सूखी दो रोटी निकाली और खाने लगे। इंदिरा जी ने कहा आप क्या करते हैं, क्या यहां खाना नही मिलता। तो वे बोले मैं एक संन्यासी हूं, सुबह भिक्षा में किसी ने यही रोटियां दी थी, मैं सरकारी धन से रोटी भला कैसे खा सकता हूं। हां होटल में उन्होंने इंदिरा से एक गिलास पानी और एक अचार की फांक ली थी, जिसका भुगतान भी उन्होंने किया था। ❖

विश्व को भारत की अद्भुत देन है धर्म

महाभारत में अनेक स्थानों पर 'यतो धर्मस्ततो जय:' आया है। महारथी कर्ण श्रीकृष्ण से कहते हैं- यतो धर्मस्ततो जय:। द्रोणाचार्य दुर्योधन से यही कहते हैं, महर्षि व्यास धृतराष्ट्र से और भीष्म भी दुर्योधन से यही बात कहते हैं और भी कई स्थानों पर 'यतो धर्मस्ततो जय:' की घोषणा हुई है। इसका अर्थ है- जहां धर्म है वहीं सफलता है, वहीं विजय है। अपने देश की न्याय की सर्वोच्च पीठ उच्चतम न्यायालय का भी यही ध्येय वाक्य है। प्रत्येक न्यायाधीश के आसन के पीछे 'यतो धर्मस्ततो जय:' लिखा रहता है। प्रश्न उठता है कि यह धर्म क्या है? इसके पालन से सफलता, विजयश्री क्यों मिल जाती है? महाभारत में, भगवद्गीता में, उपनिषदों-पुराणों में बार-बार धर्म का उल्लेख क्यों किया गया है? योगेश्वर श्रीकृष्ण कहते हैं कि धर्म की स्थापना के लिए वे बार-बार अवतार लेंगे। तो यह धर्म क्या है जिसके पतन से भगवान चिंतित हो जाते हैं और जिसकी स्थापना के लिए श्रीकृष्ण या अन्य किसी रूप में अवतार लेने को बाध्य हो जाते हैं? ❖

धर्म का अर्थ रिलीजन नहीं

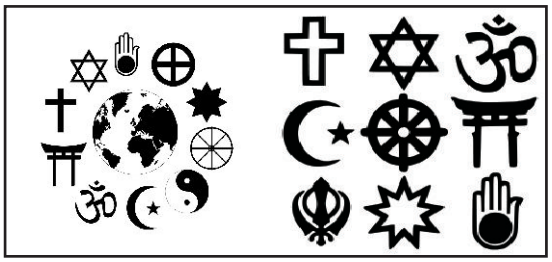

यूरोप और अमरीका आदि पश्चिमी देशों में धर्म जैसी कोई अवधारणा नहीं है। वहां रिलीजन है, इसलिए उन्होंने धर्म का अनुवाद रिलीजन कर दिया। भारत के विद्वानों (बुद्धिजीवियों) ने इसे स्वीकार भी कर लिया। यहीं से समस्या प्रारम्भ हो गई और इस समस्या ने अब विकराल रूप धारण कर लिया है। अंग्रेज तो समझते नहीं थे लेकिन भारत के ज्ञानी लोगों की अक्ल पर भी पर्दा पड़ गया और उन्होंने भी रिलीजन का अर्थ धर्म कर दिया। इसलिए यह ठीक से समझने की जरूरत है कि धर्म और रिलीजन में आकश-पाताल का अन्तर है। रिलीजन छोटी गुमटी है तो धर्म पहाड़ है, रिलीजन गंगुआ तेली है तो धर्म राजा भोज है। रिलीजन के लिए सही समानार्थी शब्द मजहब है। अन्य समानार्थी सम्प्रदाय, मत, पंथ आदि हैं किन्तु रिलीजन का अर्थ धर्म नहीं है। ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज के शब्दकोश हर साल अन्य भाषाओं के कुछ शब्दों को अंग्रेजी भाषा में शामिल कर लेते हैं। उसी प्रकार रिलीजन, नेशन, सेकुलर, कल्चर आदि शब्दों को भी अब हिन्दी भाषा में आत्मसात् कर लेना चाहिए, क्योंकि हिन्दी में इन शब्दों का ठीक से अर्थ बताने वाले कोई शब्द नहीं हैं। रिलीजन का सम्बन्ध पूजा या उपासना के तरीके से है, जबकि धर्म सम्पूर्ण सृष्टि की चिन्ता करता है। रिलीजन आपसी संघर्ष उत्पन्न करता है, वहीं धर्म सामंजस्य या मेल-जोल पैदा करता है। रिलीजन कट्टरता को जन्म देता है और धर्म उदारता का वातावरण बनाता है। रिलीजन मनुष्यों में भेद पैदा करता है और धर्म समस्त सृष्टि के कल्याण की ओर, अद्वैत की ओर प्रेरित करता है। अत: धर्म को रिलीजन समझने के विपर्यास को सुधारने की महती आवश्यकता है। जितनी जल्दी इसे सुधारा जाएगा उतनी ही शीघ्रता से भारत को विकसित राष्ट्र बनाया जा सकेगा। ❖ **साभार: पाथेय कण**

आजादी के बाद हमने क्या पाया, क्या खोया

-डॉ. उमेश कुमार पाठक

विश्व बैंक के अनुसार किसी देश के विकास के तीन मानक हैं- शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन प्रत्याशा। समकालीन वैश्विक अर्थव्यवस्था में विकास-प्रक्रिया की अलग-अलग मान्यताओं के आलोक में विकास का यह सूचकांक सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय है, क्योंकि 'मानवहित व जीवन सुरक्षा' को इसके केंद्र में रखा गया है। 15 अगस्त 1947 को प्राप्त अपनी आजादी की हम 71 वीं वर्षगाठ मनाने जा रहे हैं। आज हमें गर्व है कि हम विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोगजागर, कृषि, उद्योग, अंतरक्षि, विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में हमने आशातीत सफलता अर्जित की है तथा हम नित नये-नये कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। अभी हाल ही में हम आर्थिक विकास में उल्लेखनीय छलांग लगाते हुए फ्रांस की अर्थव्यवस्था को पछाड़कर विश्व की शक्तिशाली छठी अर्थव्यवस्था के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं। ऐसे में प्रगति का सम्यक अनुशीलन अनिवार्य हो जाता है ताकि हम यह महसूस कर सकें कि आजादी के बाद हमने क्या पाया, क्या खोया।

वैसे तो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व के हरेक कोने में लोकतंत्र का प्रचार-प्रसार बढ़ा है। भारत ही नहीं, अपितु वैश्विक स्तर पर भी राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक तंत्र में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। हालांकि, विश्व के अधिकांश विकासशील राष्ट्रों ने अपने तथाकथित चहुंमुखी विकास के लिए पश्चिम के औद्योगीकरण का अंधा अनुसरण किया है। पश्चिमी देशों खासकर सभी विकसित देशों का यह सार्वभौमिक विचार रहा है कि नव स्वतंत्र राष्ट्रों के नागरिकों में उपभोक्ता वस्तुओं के उपभोग की इच्छाएं बढ़ेंगी तो नागरिक अधिक आय अर्जित करने के लिए अभिप्रेरित होंगे। लेकिन, भारतीय संदर्भ के लिए यह एक बिल्कुल नई, लेकिन विपरीत अवधारणा साबित हुई है, क्योंकि भारतीय संस्कृति में संयम और बचत को ही आर्थिक विकास का मूल मंत्र माना गया है। इस आलोक में महात्मा गांधी ने भी आर्थिक विकास हेतु दो महत्वपूर्ण सुझावों पहला, आमदनी में बढ़ोत्तरी तथा दूसरा, व्यय में कटौती की अनुशंसा की है।

आज सतत् विकास के अनुक्रम में सबसे बड़ी समस्या, निरक्षता है। इस परिप्रेक्ष्य में पाउले फ्येर ने अपनी बहुचर्चित पुस्तक 'पेडागॉगी ऑफ द ऑप्रेस्ड' में शिक्षा-पद्धति की एक नई अवधारणा प्रस्तुत की है जिनके विचार से भारतीय विद्वान डॉ. श्यामाचरण दूबे भी साम्य रखते हैं। ध्यातव्य है कि निर्धनता, बेरोजगारी, अपराध तथा पिछड़ापन सभी मानव निर्मित समस्याएं हैं। सवाल उठता है कि मानवीय नियोजन तथा आर्थिक नियोजन में क्या अंतर है। मूलत: यह अंतर भावनाओं का अंतर है, क्योंकि मानवीय नियोजन के अंतर्गत शिक्षा, सामाजिक संरचना, मनोविज्ञान आदि पहलुओं का सम्यक अध्ययन एवं विश्लेषण शामिल है जिसके लिए वैज्ञानिक अध्ययन, धैर्य तथा कठिन प्रयासों की आवश्यकता होती है। मानवीय नियोजन की बात करें तो इसकी प्रभावशीलता के लिए नीति निर्धारकों, कार्यकर्ताओं तथा आमजनों के बीच सार्थक एवं सफल संवाद अनिवार्य होता है। चूंकि, मानवीय कल्याण तथा लोक महत्व के विषय में सहमति और असहमति दोनों पाई जाती है, इसलिए यह आवश्यक नहीं है कि विकास का एक सार्वभौमिक क्षेत्र सुनिश्चित किया जा सके। बेशक आजादी के बाद भारत में साक्षरता दर में काफी सुधार हुआ है, लेकिन शिक्षा से एकाएक नैतिक मूल्यों का पलायन बेहद चिंताजनक है। परिणामस्व रूप हम साक्षर तो हो गए, लेकिन आज तक भी हम शिक्षित नहीं हो पाए हैं।

भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली में मूल्यों पर काफी जोर था। हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली व्यावसायिक हो गई है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली का मानवीय मूल्यों से दूर-दूर तक कोई रिश्ता नहीं दिखता। आलम यह है कि आज हमारे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक पतन के

साक्षर समाज कहीं न कहीं अधिक जवाबदेह है। राजनीतिक-आर्थिक भ्रष्टाचार, काला बाजारी, मतदान के प्रति अरूचि, व्यावहारिक कुटलिता, लैंगिक असमानता भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा आदि जैसी विसंगतियां हमारे तथाकथित शिक्षित समाज में अपेक्षाकृत अधिक प्रचलन में हैं।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। ऐसे में विकास का एक महत्वपूर्ण सरोकार हमारा कृषि है। लेकिन, कृषि क्षेत्र में भी पुरातन सहकारी कृषि प्रणाली से विमुख होना चिंतनीय है। आज हमें अपनी कृषि व्यवस्था को तथाकथित उद्योग की राह पर ले जाने वाले लालची धनकुबेरों के कुप्रभाव से बचाना होगा। क्योंकि, ग्रामीण किास का यह एक ऐसा मुद्दा है जिसके चलते लाखों किसान आत्महत्या का मार्ग अपना रहे हैं और, कृषि विकास का हमारा दावा खोखला प्रतीत हो रहा है। चूंकि, आर्थिक स्तर पर मजबूती और बढ़ते औद्योगिकीकरण के बावजूद भारत को कृषि प्रधान देश के रूप में ही माना जाता है, यही वजह है कि केंद्र से लेकर राज्य सरकारें प्रत्येक वर्ष बजट में कृषि पर प्रमुखता से जोर देती हैं। इतना ही नहीं, समय-समय पर प्रभावी कृषि नीतियां भी लागू करने का प्रयास किया जाता रहा है। प्रत्यक्ष तौर पर कभी खाद्यान्न संकट से जूझने वाला हमारा देश भारत आज इतना आत्मनिर्भर हो चुका है कि अब वह दूसरे देशों को भी खाद्यान्न निर्यात करता है जो हमें गौरवान्वित करता है, आशान्वित करता है। लेकिन मूल्यों का अवमूल्यन यहां भी सहज परिलक्षित होता है। क्योंकि, इस उपलब्धि के मध्य हम देश को कृषि उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने वाले किसान को भूल जाते हैं जो आज भी आत्मनिर्भरता की बजाय गुरबत की जिन्दगी व्यतीत करता है।

पर्यावरण समाज से जुड़ा हुआ एक महत्वपूर्ण है। जलवायु परिवर्तन ने हमारे लिए पर्यावरण असंतुलन की स्थिति पैदा कर दी है। सर्वविदित है कि हमारा मानसिक, शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य, जल, वायु की शुद्धता और आस-पास के वातावरण की स्वच्छता पर निर्भर करता है। किंतु औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया तीव्र हो रही है जिनमें विभिन्न उद्योगों से उत्सर्जित होने वाली जहरीली गैसें, वाहनों का धुंआ, वातानुकूलित यंत्रों की गैस कूड़ा-करकट व ईंधन का धुंआ प्रमुख है। विगत कुछ वर्षों में विश्व के अन्य देशों की भांति भारत में भी बदलते मौसम के दौरान हजारों लोगों ने अपनी जान गंवाई है। बदलते मौसम के कारण बीमारियों के प्रति हमारे शरीर का संतुलन नहीं बन पा रहा है।

सारांशत: हाल ही के कुछ दशकों में वैश्वीकरण के चलते भारत की विकास प्रक्रिया व उसके स्वरूप और चरित्र में निरंतर अपेक्षित-अनपेक्षित बदलाव आए हैं। आजादी के बाद विकास की प्रक्रिया बहुत तीव्र हुई है। शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग, कृषि, रोजगार, अंतरिक्ष आदि सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व कीर्तिमान स्थापित हुए हैं। भौतिक संसाधन बढ़े हैं, दूरियां घटी हैं। तकनीकी सुख-सुविधाओं का आशातीत विस्तार हुआ है, बावजूद इसके प्रत्येवक व्यक्ति के पास समय की कमी महसूस हो रही है। सूचना-संग्रहण व तथ्य संकलन की क्षमता एवं प्रवृत्ति का विस्तार हुआ है। किंतु चिंतन, अध्ययन एवं मनन की प्रवृत्ति नष्ट होती जा रही है।

सारांशत: हाल ही के कुछ दशकों में वैश्वीकरण के चलते भारत की विकास प्रक्रिया व उसके स्वरूप और चरित्र में निरंतर अपेक्षित-अनपेक्षित बदलाव आए हैं। आजादी के बाद विकास की प्रक्रिया बहुत तीव्र हुई है। शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग, कृषि, रोजगार, अंतरिक्ष आदि सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व कीर्तिमान स्थापित हुए हैं।

इतना ही नहीं, पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक और ईश्वर को कोरी परिकल्पना सिद्ध करने का दुष्परिणाम यह हुआ कि नैतिकता, आदर्श एवं जीवन मूल्य बेमानी हो चले हैं। विकास की आधुनिक अवधारणा में 'देने की प्रवृत्ति' का नाश हो रहा है तथा अनियंत्रित दोहन की प्रवृत्ति निरंतर जोर पकड़ रही है। जो विकास पहले राष्ट्रहित, राष्ट्रीय भावना एवं लोक कल्याण से ओत-प्रोत था, वह अब विदेशी पूंजी के लोभ में सारी सीमाएं तोड़ देने को आतुर है। ऐसे में हमारी आने वाली पीढ़ियां कैसा जीवन जिएंगी, यह सोचना अत्यंत विचारणीय है। ❖

पुण्यभूमि भारत

-विवेक ठाकुर

यदि इस पृथ्वी पर कोई ऐसा देश है, जो मंगलमयी पुण्यभूमि कहलाने का अधिकारी है; ऐसा देश, जहां संसार के समस्त जीवों को अपना कर्मफल भोगने के लिए आना ही है; ऐसा देश, जहां ईश्वरोन्मुख प्रत्येक आत्मा का अपना अन्तिम लक्ष्य प्राप्त करने के लिए पहुंचना अनिवार्य है; ऐसा देश, जहां मानवता के ऋजुता, उदारता, शुचिता एवं शांति का चरम शिखर स्पर्श किया हो तथा इन सबसे आगे बढ़कर जो देश अन्दृष्टि एवं आध्यात्मिकता का घर हो, तो वह देश 'भारत' ही है।

भारत का प्राचीन इतिहास अलौकिक उद्यम एवं उसके बहुविध प्रदर्शन, असीम उत्साह, विभिन्न शक्तियों की आपरिहत क्रिया और प्रतिक्रिया के समन्वय तथा इन सबसे परे एक देवतुल्य जाति के गंभीर चिन्तन की अपूर्व गाथा है। भारत के विशाल धार्मिक साहित्य, काव्यसिंधु, दर्शनग्रन्थों एवं विभिन्न शास्त्रों की प्रत्येक पंक्ति हमारे समक्ष-विशिष्ट राजाओं की वंशावलियों एवं जीवन-चरित्रों की अपेक्षा सहस्त्र गुना अधिक स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करती है। भारत ही वह पुरातन भूमि है, जहां ज्ञान ने अन्य देशों में जाने से पूर्व अपनी आवास भूमि बनाई थी। जिसके आध्यात्मिक प्रवाह के भौतिक प्रतीक ये समुद्राकार नद हैं और चिरन्तन हिमालय एक तह पर दूसरी तह चढ़ाकर अपने हिममण्डित शिखरों द्वारा मानो स्वर्ग के रहस्यों में ही झांक रहा है। यह वही भारतवर्ष है, जिसकी धरा को महानतम ऋषियों की चरणरज पवित्र कर चुकी है। सर्वप्रथम मानव, प्रकृति एवं अन्तर्जगत के रहस्यों की जिज्ञासाओं के अंकुर यहीं उगे थे। आत्मा की अमरता, एक परमपिता परमेश्वर की सत्ता, प्रकृति और मनुष्य के भीतर ओत-प्रोत एक परमात्मा के सिद्धान्त भी सर्वप्रथम यहीं उठे और यहीं धर्म तथा दर्शन के उच्चतम सिद्धान्तों ने अपने चरम शिखर स्पर्श किए। इस भूमि से अध्यात्म एवं दर्शन की लहर पर लहर बार-बार उमड़ी और समस्त संसार पर छा गई।

क्या अद्‌भुत देश है भारत! इस पुण्यभूमि पर चाहे जो खड़ा हो वह इसी भूमि का पुत्र हो अथवा विदेशी, यदि उसकी आत्मा दुर्दान्त पशुओं के स्तर तक नहीं गिर चुकी है, तो वह स्वयं को पृथ्वी के इन श्रेष्ठतम एवं शुद्धतम पुत्रों के तेजोमय विचारों से घिरा हुआ अनुभव करेगा। जो शताब्दियों तक पशु को देवत्व के शिखर तक उठाने के लिए कार्य करते रहे हैं और जिनका प्रारम्भ खोजने में इतिहास भी विफल रहा है। यहां का वायुमण्डल ही आध्यात्मिकता की तरंगों से ओत-प्रोत है।

यह देश दर्शन, आध्यात्मिकता, नीतिशास्त्र एवं उन सबका पुण्यधाम है, जो मनुष्य को पशुत्व के विरूद्ध उसके सतत् संघर्ष में विश्रामस्थल प्रदान करते हैं। यह देश ही वह साधना भूमि है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने 'कर्त्ता' के आवरण को फेंककर अजर-अमर, आदि-अन्तरहित आत्मा का साक्षात्कार कर सकता है। यही वह देश है, जहां धर्म को व्यावहारिक एवं सच्चा रूप प्राप्त हुआ और केवल यहीं स्त्री तथा पुरूष, धर्म के अन्तिम लक्ष्य का साक्षात्कार करने के लिए साहसपूर्वक कूद पड़े। यहीं और केवल यहीं, मानव अन्तः करण का विस्तार इतना अधिक हुआ कि उसमें न केवल सम्पूर्ण मानव जाति समा गई अपितु पशु-पक्षी और पेड़-पौधों को भी स्थान मिल गया। उच्चतम देवताओं से लेकर रेत के कणों, तक

महानतम से निम्नतम तक, सब कोई उस विशाल अनन्त मानव अन्त:करण में स्थान पा गए और केवल यहीं मानव आत्मा ने सकल ब्रह्माण्ड को एक अविच्छिन्न, अखण्ड इकाई के रूप में देखा और उसकी प्रत्येक धड़कन को अपनी धड़कन जाना।

सम्पूर्ण विश्व पर हमारी मातृभूमि का महान् ऋण है। एक-एक देश को लें तो भी इस पृथ्वी पर दूसरी कोई जाति नहीं है, जिसका विश्व पर इतना ऋण है जितना के इस सहिष्णु एवं सौम्य हिन्दू का। 'निरीह हिन्दू' कभी-कभी ये शब्द तिरस्कार स्वरूप प्रयुक्त होते हैं, किन्तु कभी किसी तिरस्कार युक्त शब्द प्रयोग में भी कुछ सत्यांश रहना सम्भव हो तो वह इसी शब्द प्रयोग में है। यह 'निरीह हिन्दू' सदैव ही जगतपिता की प्रिय सन्तान रहा है। जब ग्रीस का अस्तित्व नहीं था, रोम भविष्य के अंधकार के गर्भ में छिपा हुआ था, जब आधुनिक यूरोप वासियों के पुरखे जंगलों में रहते थे, उस समय भी भारत में कर्म चेतना का साम्राज्य था। उससे भी पूर्व, जिसका इतिहास के पास कोई लेखा नहीं, जिस सुदूर अतीत के गहन अंधकार में झांकने का साहस परम्परागत किवदन्ती भी नहीं कर पाती। उस सुदूर अतीत से अब तक, भारतवर्ष से न जाने कितनी विचार तरंगे निकली हैं। किन्तु उनका प्रत्येक शब्द अपने आगे शान्ति और पीछे आशीर्वाद लेकर गया है। संसार की सभी जातियों में केवल हम ही हैं, जिन्होंने कभी दूसरों पर सैनिक विजय प्राप्ति का पथ नहीं अपनाया और इसी कारण हम आशीर्वाद के पात्र हैं। हम आज भी जीवित हैं और यदि आज भी हमारे पुराणऋषि मनु वापस लौट आएं तो उन्हें ऐसा नहीं लगेगा कि वे किसी नए देश में आ गए हैं। वे देखेंगे कि सहस्त्रों-सहस्त्रों वर्षों के अनुभव एवं चिन्तन से निष्पन्न वही प्राचीन विधान आज भी यहां विद्यमान हैं। अनंत शताब्दियों के अनुभव एवं युगों की अभिज्ञता का परिपाक वह सनातन आचार-विचार आज भी वर्तमान है। यही वह भारतवर्ष है, जो अनेक शताब्दियों तक शत् शत् विदेशी आक्रमणों के आघातों को झेल चुका है। यही वह देश है, जो संसार की किसी भी चट्टान से अधिक दृढ़ता से अपने अक्षय पौरूष एवं अमर जीवन-शक्ति के साथ खड़ा हुआ है। इसकी जीवन शक्ति भी आत्मा के समान ही अनादि अनन्त एवं अमर है और हमें ऐसे देश की सन्तान होने का गौरव प्राप्त है। ❖

समस्त प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं मातृवन्दना पत्रिका के रजत जयंती वर्ष की
हार्दिक शुभकामनाएं।

विजय जोशी
ठियोग

समस्त प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं मातृवन्दना पत्रिका के रजत जयंती वर्ष की
हार्दिक शुभकामनाएं।

रामकृष्ण शर्मा
सरकारी ठेकेदार, ठियोग नगर परिषद्

समस्त प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं मातृवन्दना पत्रिका के रजत जयंती वर्ष की
हार्दिक शुभकामनाएं।

हिन्दुस्तान पेट्रोलियम
HP

Shiv Shakti
Petrol Pump
Pawari

गोवंश संरक्षण को मिले जमीन

-प्रताप सिंह पटियाल

प्राचीन काल में भारत में कृषि के साथ गोवंश को मजबूत अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी माना जाता था, जो कि दूध की आपूर्ति के साथ कृषि का मूलाधार था। मगर प्रश्न उठता है कि पूज्य माना जाने वाला गोवंश आखिर बेसहारा होकर सड़कों पर धके खाने को क्यों मजबूर है? हम अपने स्वार्थों के कारण इसके लिए खुद जिम्मेदार हैं। अब यह लावारिस गोवंश जनजीवन के लिए खतरा बन चुका है, जिस कारण कई दुर्घटनाएं हो रही है और बेसहारा गोवंश खुद भी दुर्घटनाओं का शिकार हो रहा है। आलम यह है कि पशु क्रूरता अधिनियम के बावजूद इस गोवंश की तस्करी होती है। यह समस्या सिर्फ हिमाचल में ही नहीं, बल्कि इसने पूरे देश में विकराल रूप ले लिया है। गोवंश के लिए जितनी भी योजनाएं बनी, धरातल पर सब छाप छोड़ने में नाकाम रही है। जिन पंचायतों ने गोसदनों का निर्माण कार्य किया, वह संसाधनों की कमी के कारण अधूरा रह गया, जिसमें मुख्य रूप से चारा और पानी की समस्या है। मौजूदा सरकार बनते ही 'गो सेवा आयोग' की घोषणा हुई है।

इस आयोग को खुद गोवंश संरक्षण के लिए भूमि चिन्हित करने में सक्रियता दिखानी होगी। साथ ही इस बात पर विचार करना होगा कि कई पड़ोसी राज्यों द्वारा चलाई जा रही धान की पराली तथा गेहूं के अवशेष तूड़ी से इस गोवंश के लिए चारे का समाधान हो सकता है, वहीं किसानों की आय का जरिया बन सकता है। तब ही इन आवारा पशुओं ने फसलों को उजाड़ कर कई एकड़ भूमि को बंजर बना दिया है। इसी वजह से किसान परंपरागत खेती छोड़कर गैर कृषि कार्यों की तरफ रूखसत हो रहे हैं। दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि हमारे देश में गोवंश राजनीतिक मुद्दा बन कर रह गया है। सरकारों को गंभीरता से गोवंश संरक्षण को महत्व देना होगा। जब तक गो संरक्षण नहीं होगा, तब तक कोई शहर स्मार्ट सिटी नहीं बन सकता है और जीरो बजट खेती, किसानों को दोगुनी आय जैसी योजनाओं को तभी कामयाबी मिल सकेगी। गोसदनों के निर्माण से जैविक खेती के लिए खाद आसानी से उपलब्ध होगी तथा रासायनिक खादों के उपयोग की अपेक्षा कृषि की उपज में सुधार होगा। ❖

हि.क.आ. का नि:शुल्क चिकित्सा जांच शिविर

हिमगिरी कल्याण आश्रम व चिकित्सा विभाग के डायरेक्टर, जिला प्रशासन के सहयोग से चिकित्सा शिविरों के आयोजन किए गए। 9-10 केलांग, 11-12 ठोलंग एवं 13-14 जुलाई को उदयपुर में नि:शुल्क चिकित्सा जाँच की गई। इन चिकित्सा शिविरों के प्रथम दिन 265 लाभार्थियों के पंजीकरण व जांच की गई। चिकित्सा शिविर का उद्घाटन डॉ रामलाल मार्केण्डय कृषि, जनजाति विभाग, आईटी मन्त्री ने दीप प्रज्वलन कर किया।

जिला उपमण्डल अधिकारी श्री अमर सिंह नेगी, जिला चिकित्सा अधिकारी श्री देवेन्द्र दत्त शर्मा, श्री उमेश सूद, श्री रमेश कुमार जिला परिषद् चेयरमैन, श्री शमशेर टी सी मैम्बर, श्री मोहन जिला सचिव हि.क.आश्रम लाहौल, कूल्लु, श्री श्याम, श्री रामलाल, श्री अमित, सुश्री सुनीता देवी तथा इंदिरा गांधी मेडिकल कॉलेज शिमला से डॉ पीसी नेगी डीन व डॉ राजेश कुमार शर्मा हदय रोग विशेषज्ञों की टीम व श्रीमती डॉ कल्पना नेगी स्त्री रोग विशेषज्ञ, डॉ प्रमोद जरेट, एम डी, सहायक आचार्य, डॉ अजय व डॉ सुशांत रेडियोलोजी, डॉ रविन्द्र प्रयोगशाला तकनीकी, डॉ अन्या पीजी स्त्री रोग केलंग के चिकित्सा दल के सदस्य उपस्थित रहे। चिकित्सा शिविर में मुख्य अतिथि का अपनी लाहौली संस्कृति के टोपी व खतक से स्वागत किया गया। सरस्वती विधा मन्दिर स्कूल के बच्चों द्वारा मन्त्रोच्चार तथा मंत्री महोदय ने विस्तार से कहा कि आज हमारे क्षेत्र में विशेषज्ञों की टीम आकर स्वास्थ्य जाँच करे जिसके लिए लोगों को जागरूक करना होगा।

हम भी प्रयास कर रहे हैं कि आने वाले समय में हिमाचल में चिकित्सकों की कमी नहीं रहेगी। श्रीभगवान प्रांत संगठन मन्त्री ने सभी का स्वागत करते हुऐ बताया की यह चतुर्थ चिकित्सा शिविर है एवं पहली बार दो-दो दिन का शिविर लगा रहे हैं। पहला 2008 केलंग में, दूसरा 2010 उदयपुर में, तीसरा 2012 कारदंग गोंपा के लामा द्वारा किया। सभी बन्धु भगिनीयों से प्रार्थना करता हूँ कि वनवासी समाज के मध्य स्वाभिमान, स्वावलम्बन, तथा सर्वागीण विकास के लिए तू मैं एक रक्त का भाव निर्माण हो एवं समरसता का संचार कर जागरण का कार्य बढे।❖

नेरी में पुराण अनुशीलन मासिक गोष्ठी

ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी में पुराणानुसंधान योजना के अन्तर्गत श्रीमद्भागवत पुराण अनुशीलन मासिक गोष्ठी के द्वितीय सत्र में शोध संस्थान के समन्वय प्रमुख चेतराम गर्ग ने कलियुग के प्रथम राजा परीक्षित के जीवन दर्शन पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने राजा परीक्षित की वंश परम्परा, प्रजा पालन में किए गए कार्य, दिग्विजय तथा उनके काल पर विस्तृत प्रकाश डाला।

इतिहास में अनुसंधान एक निरन्तर प्रक्रिया है। महाभारत कालीन अवशेष उत्तर प्रदेश के बागपत क्षेत्र के सिनौली गांव में मिलना महाभारत की सत्यता के लिए अच्छे संकेत हैं। इतिहास के विद्यार्थी रहे रणजीत सिंह गुलेरिया ने अध्यक्षीय भाषण में नेरी शोध संस्थान के सफल प्रयासों के लिए बधाई दी और कहा कि भारत के इतिहास की सटीक जानकारी ही किसी राष्ट्र को जीवित रख सकता है। इस गोष्ठी में संस्थान के कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्र कुमार नन्दा, डॉ. जे.पी. शर्मा, श्री अनिल शर्मा, शशि शर्मा, प्रदीप ठाकुर, राजेश कुमार शर्मा, ओम प्रकाश शुक्ला, रत्न चन्द शर्मा, प्यार चन्द परमार, ज्योति प्रकाश आदि अन्य विद्वानों ने भाग लिया।❖ **भूमि दत्त शर्मा, महासचिव, शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर**

चर्च द्वारा धर्मांतरण व अन्य दुष्कृत्यों की जांच हेतु आयोग तथा धर्मांतरण रोधी कानून बने : विहिप

विश्व हिन्दू परिषद् ने कहा है कि चर्च व उसके द्वारा संचालित तथा-कथित सेवा कार्य धर्मांतरण ही नहीं अपितु कई प्रकार के अवैधानिक-अनैतिक कृत्यों के केंद्र बन चुके हैं। इन कुकर्मों का अनेक बार भंडाफोड़ होने के बावजूद प्रचार तन्त्र व प्रशासन में इनकी गहरी पैठ तथा मदर टेरेसा के, इन्हीं के द्वारा निर्मित आभा-मण्डल के कारण इनके पाप आसानी से छुपाए जाते रहे हैं। परन्तु अब मानवता के सभी मापदंडों को ध्वस्त करते हुए उनके दुष्कर्मों की एक लम्बी श्रंखला सामने आ रही है। विहिप के केन्द्रीय संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र जैन ने केंद्र सरकार से चर्च पादरियों तथा उनके द्वारा संचालित संस्थाओं की गहन जांच हेतु एक आयोग बनाने, धर्मांतरण विरोधी कानून बनाने, पर्यटन के बहाने धर्मान्तरण व धर्म-प्रचार में लिप्त विदेशियों पर शिकंजा कसने व तथा-कथित अनाथ आश्रम इत्यादि में पादरियों द्वारा बच्चों व ननों का शोषण किए जाने पर अबिलम्ब अंकुश लगाने की मांग की है।

मदर टेरेसा द्वारा स्थापित रांची स्थित 'निर्मल हृदय आश्रम' में किए जा रहे यौनाचार, बच्चों के व्यापार व अन्य अवैध कार्यों के पर्दाफास से पूरी मानवता कराह रही है। 'आश्रम' में अनाथ लड़कियों से दुष्कर्म कर उनके बच्चों को बेच दिया जाता था। केवल इसी आश्रम से गत कुछ दिनों में ही 280 बच्चे गायब हुए हैं। इनमें से कई बच्चों को मरा हुआ घोषित कर दिया जाता था परन्तु बाद में पता चलता था कि इन्हें तो बेचा जा चुका था। इस 'आश्रम की गतिविधियों की शिकायत पहले भी की गई थी किन्तु, षडयंत्र पूर्वक, जांच अधिकारी पर ही छेड़खानी का आरोप लगाकर उसे निर्लंबित करा दिया गया। विश्व हिन्दू परिषद् को आशंका है कि मदर टेरेसा द्वारा स्थापित अन्य तथाकथित 'आश्रमों' में भी इस प्रकार की अवैध गतिविधियों का संचालन होता है। पादरियों की यौन पिपासा की शिकार ननों तथा अनाथ बच्चों के समाचार सम्पूर्ण विश्व से आते ही रहते हैं यहां तक कि वैटिकन भी इससे अछूता नहीं रहा है। गत कुछ वर्षों से भारत में पादरियों के इन दुष्कर्मों की संख्या में आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि हुई है। कुछ दिन पूर्व ही एक नन ने पाँच पादरियों पर आरोप लगाया है कि वे कई वर्षों से उसका यौन शोषण कर रहे थे। 'कन्फैशन बॉक्स' में विवाह पूर्व संबंधों की स्वीकृति के बाद से उस नन को ब्लैक मेल कर ये उसके साथ लगातार दुष्कर्म करते रहे। पीड़ितों द्वारा इसकी शिकायत चर्च के वरिष्ठ अधिकारियों से किए जाने पर भी उसे लगातार अनसुना किया जाता रहा। दुष्कर्म पीडिता कुछ ननें तो आत्म-हत्या तक कर चुकी हैं।

विश्व हिन्दू परिषद् केंद्र सरकार से यह मांग करती है कि-

सर्वोच्च न्यायालय के सेवा निवृत न्यायाधीश की अध्यक्षता में नियोगी कमीशन जैसा एक जांच आयोग बनाया जाए जो मदर टेरेसा व अन्य मिशनरियों द्वारा स्थापित संस्थाओं की विस्तृत जांच कर इनके विदेशी फंडिंग, आतंकी संगठनों से इनके सम्बन्ध, हिन्दुओं के प्रति घृणास्पद साहित्य के निर्माण, ननों तथा बच्चों से दुष्कर्म तथा बच्चों के अवैध व्यापार जैसे विषयों पर यह आयोग गहन जांच करे। अवैध धर्मान्तरण व सामाजिक विद्वेष निर्माण के आरोप इन पर लगते रहे हैं। तूतीकोरन हिंसा की प्रेरणा भी चर्च ही है, ऐसा आरोप भी इन पर है। हिन्दू संतों की हत्या का संदेह भी इन पर व्यक्त किया जाता रहा है। ऐसे विषय भी इस आयोग के कार्यक्षेत्र में हों। अवैध धर्मांतरण रोकने हेतु धर्म स्वातन्त्रता अधिनियम बनाया जाए, जिसकी मांग कुछ आयोग तथा हिन्दू समाज निरंतर करता रहा है। पर्यटन बीज़ा पर भारत आकर धर्मांतरण या धर्म प्रचार में लिप्त विदेशी पर्यटकों का बीज़ा रद्द कर उनके विरुद्ध कड़ी से कड़ी कानूनी कार्यवाही हो।❖ **जारी कर्ता :विनोद बंसल, प्रवक्ता विश्व हिन्दू परिषद।**

सैटेलाइट तस्वीरों से पुख्ता होगी फसल बीमा योजना

केंद्र सरकार देश के किसानों को मुहैया कराई जा रही फसल बीमा योजना को तकनीक से पुख्ता बनाने की तैयारी कर रही है। कृषि मंत्रालय ने सैटेलाइट से ली गई तस्वीरों के माध्यम से हरियाणा में खेतों में फसल की हालत का पायलट प्रोजेक्ट भी किया है। इसमें मिली सफलता के आधार पर सरकार आगे बढ़ रही है। आने वाले दिनों में वह फसल में हुए नुकसान और फायदे के साथ ही कितनी सरकारी खरीद की जाए, इसका भी पता लगा लेगी। देश में किसानी की तकनीक के जरिए लाभ पहुंचाने के मुद्दे पर केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री राजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि सरकार इस पर रूपरेखा तैयार कर रही है।

हाल में कनाडा की एक कंपनी के साथ हुई चर्चा का हवाला देते हुए उन्होंने बताया कि संबंधित कंपनी ने प्रस्तुतीकरण दिया और हरियाणा में पायलट प्रोजेक्ट को अंजाम दिया गया। सीधे तौर पर सरकार को इसका फायदा कृर्षि पैदावार के आंकलन, नुकसान और सरकारी खरीद व्यवस्था को बेहतर बनाने में दिखाई दे रहा है। शेखावत ने कहा कि इसके जरिये फसल बीमा की व्यवस्था को चाक-चौबंद करना आसान है। सैटेलाइट तस्वीर के जरिए यह पता लगाना बहुत ही आसान है कि अमुक राज्य के किस क्षेत्र में कृषि की प्राकृतिक आपदा या ज्यादा बारिश या अन्य कारणों से कितना नुकसान हुआ है। ❖

With best compliments from:

HOTEL

J.K. INTERNATIONAL

(Regd. Himachal Tourism)

Regd. No. 9-419/2009-DTO-SML-928 dt. 04-03-2010
GST: 02BOQPK7162E1ZY
LT.-RC No. 53050100076

Mob.: +91-94181-09888

Near Bus Stand (Distance 100 Mtrs.),
R/Peo, Tehsil Kalpa, Distt. Kinnaur, H.P.

समस्त प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं मातृवन्दना पत्रिका के रजत जयंती वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

+

DURGA

MEDICAL STORE

RECKONG PEO

तेजी से बढ़े करदाता

वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) प्रणाली लागू होने के बाद अप्रत्यक्ष कर के क्षेत्र में तेजी से करदाताओं की संख्या बढ़ी है। जब एक जुलाई 2017 को इसे लागू किया जा रहा था, उस समय केंद्रीय उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क और राज्यों के बिक्री कर या वैट विभाग 63.76 लाख करदाता ही पंजीकृत थे। यह जीएसटी का ही कमाल है कि महज एक साल के भीतर ही देश में अप्रत्यक्ष करदाताओं की संख्या करीब-करीब दूनी, 1.15 करोड़ हो गई। जीएसटी के लिए सूचना तकनीक प्लेटफॉर्म बनाने और चलाने वाली कंपनी जीएसटी नेटवर्क के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) प्रकाश कुमार का कहना है कि जीएसटी प्रणाली की सबसे बड़ी विशेषता इसका शत-प्रतिशत डिजिटल होना है। इसमें चाहे छोटे कारोबारी हो या बड़े कारोबारी, सबको डिजिटल तरीके से ही रिटर्न दाखिल करना है। इस चक्कर में सभी कारोबारी डिजिटल हो गए। इसमें रिटर्न फॉर्म दायर करते वक्त कुछ इस तरह से सूचना मांगी जाती है कि कारोबारी कर चुराएंगे, तो एक न एक दिन पकड़े जाएंगे। इसलिए कारोबारी यदि निश्चिंतता से व्यापार करना चाहते हैं तो वे इसमें पंजीकृत होने से ही भलाई समझते हैं। यही वजह है कि जीएसटी में पंजीकरण कराने वालों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इतने कारोबारियों ने पंजीकरण करवा लिया है, ये कर भी देते हैं, इस सवाल पर प्रकाश कुमार ने बताया कि पंजीकरण में बढ़ोतरी के साथ ही सक्रिय करदाताओं (एक्टिव टैक्सपेयर) की संख्या भी बढ़ रही है। जुलाई, 2017 में ऐसे करदाताओं की संख्या 60 लाख से कुछ ज्यादा थी जो कि सितंबर आते-आते 80 लाख से ऊपर चला गया। फरवरी 2018 में तो सक्रिय करदाताओं की संख्या एक करोड़ तक पहुंच गई। जून 2018 में ऐसे करदाताओं की संख्या एक करोड़ दस लाख से भी ऊपर पहुंच गई है। ❖

हर वर्ग के लोगों को मिलेगा गृहिणी सुविधा योजना का लाभ

Himachal Pradesh
Grahini Suvidha Yojana
गृहिणी सुविधा योजना
List of Himachal Pradesh Government
Scheme Budget 2018-2019
www.mygovernmentschemes.com

हिमाचल में अब एक भी गरीब परिवार बिना गैस कनेक्शन के नहीं रहेगा। प्रदेश सरकार की हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना के तहत हर वर्ग के लोगों को मुफ्त गैस कनेक्शन मिलेंगे। इस योजना का लाभ लेने के लिए पंचायतों के पास आवेदन करना होगा। इसमें गरीबी के अलावा शर्त यह है कि परिवार के पास पहले से गैस कनेक्शन नहीं होना चाहिए। पहले चरण के लिए लोगों को 31 जुलाई तक आवेदन करना होगा। प्रारंभिक जांच के बाद पंचायतें डीएफएससी को आवेदन भेजेंगी। डीएफएससी आधार नंबर के साथ गैस एजेंसी को आवेदन करेंगे और यह चेक किया जाएगा कि आवेदक के पास पहले से गैस कनेक्शन है या नहीं। अब प्रदेश सरकार की हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना में गैस कनेक्शन निशुल्क मिलेगा। प्रदेश सरकार करीब 3500 रूपये का कनेक्शन खर्च खुद वहन करेगी।❖

विश्व में पहचान बनाएगी हिमाचली टोपी और शॉल

हिमाचल की टोपी और शॉल विश्व भर में पहचान बनाएंगे। हिमाचलियों की शान टोपी, शाल और पट्टी के उत्पाद अब वैश्विक मार्केट को चुनौती देंगे। पारंपरिक ऊन और पश्मीना के धागे से बनने वाले देसी उत्पादों में अब सिल्क की फाइन ब्लेडिंग (सम्मिश्रण) होगी। प्रदेश सरकार पहली बार इन उत्पादों के वेल्यू एडिशन और उत्पादकों की आर्थिकी को मजबूत करने के लिए यह बड़ा बदलाव करने जा रही है। ताकि हिमाचली सभ्यता से जुड़े इन उत्पादों को कीमत भी बढ़ सके और वैश्विक स्तर की मार्केट के मुकाबले का कपड़ा इन उत्पादों की शोभा बढ़ा सके। मंडी जिले में रेशम कीटपालन को बढ़ाना देने के लिए बालीचौकी में कोशकृमि उद्यमिता विकास एवं नवोन्मेष केंद्र में सरकार ने इस बदलाव की कवायद शुरू कर दी है। हिमाचल के 1672 गांव के लगभग 12000 से अधिक परिवार हिमाचल में जुड़े हैं रेशम कीट पालन से। बालीचौकी में रेशम ट्रेनिंग सेंटर में धागे के सैंपल तैयार, मजबूत होगी लोगों की आर्थिकी, रोजगार के अवसर भी खुलेंगे।❖

सुरक्षित मातृत्व अभियान में हिमाचल अव्वल

प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान (पीएमएसएमए) के तहत अपने बेहतर प्रदर्शन के दम पर हिमाचल ने देशभर में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जगत प्रकाश नड्डा ने हिमाचल के अतिरिक्त मुख्य सचिव स्वास्थ्य बीके अग्रवाल को शुक्रवार सांय नई दिल्ली में पीएमएसएमए के 'आई प्लैज फॉर 9' अचीवर्स पुरस्कार समारोह में इस पुरस्कार से सम्मानित किया। बीके अग्रवाल ने कहा कि केंद्र ने प्रदेश को पीएमएसएमए क्लीनिकों में सर्वाधिक गर्भवती महिलाओं की प्रसव पूर्व जांच करवाने के लिए यह पुरस्कार प्रदान किया है। 68.26 प्रतिशत महिलाओं ने अस्पतालों में प्रसव से पूर्व जांच करवाई। देश के निजी चिकित्सकों को भी 36 पुरस्कार प्रदान किए जए, जिनमें से जिला मंडी के डॉ0 जनदीप बंगा को विशिष्ट सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ❖

3 माह के बाद नहीं होगा थर्मोकोल इस्तेमाल

प्रदेश में पॉलीथीन के बाद अब थर्मोकोल के इस्तेमाल पर भी पूरी तरह से पाबंदी लग गई है। सरकार ने इसे लेकर अधिसूचना जारी कर सभी कारोबारियों को 3 माह के भीतर थर्मोकोल का स्टाक खत्म करने के निर्देश दिए हैं। इसके बाद कोई भी थोक या परचून कारोबारी थर्मोकोल से बने उत्पाद नहीं बेच पाएंगे। यदि किसी कारोबारी या आम लोगों के पास थर्मोकोल मिलता है तो उस पर 500 से 25 हजार रूपए तक का जुर्माना किया जाएगा। यही नहीं पहाड़ों व खुले में थर्मोकोल फैंकने पर भी जुर्माना किया जाएगा। जाहिर है कि अब कोई भी व्यक्ति शादी समारोह, धार्मिक आयोजनों व अन्य किसी भी प्रकार के कार्यक्रमों के दौरान इनका प्रयोग नहीं कर पाएगा। हिमाचल प्रदेश नॉन बायोडिग्रेडेबल एक्ट के प्रावधानों के तहत सरकार ने पर्यावरण संरक्षण के मकसद से थर्मोकोल के कप, प्लेट, गिलास व अन्य सामान के उपयोग पर रोक लगाई है। मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने बीत 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर थर्मोकोल के प्रयोग पर प्रतिबंध का ऐलान किया था। इसके बाद राज्य मंत्रिमंडल ने भी इसे मंजूरी दी। अब सरकार ने अधिसूचना जारी करी दी है। पॉलीथीन, प्लास्टिक और थर्मोकोल के कारण पर्यावरण को बहुत ज्यादा खतरा पैदा हो चुका है। पर्यावरण के अलावा यह इंसानी जिंदगी के लिए भी घातक साबित हो रहा है। इस कारण कैंसर जैसी खतरनाक बीमारियां लोगों में पनप रही हैं। ❖

प्रतापी राजा कृष्णदेव राय

एक के बाद एक लगातार हमले कर विदेशी मुस्लिमों ने भारत के उत्तर में अपनी जड़ें जमा ली थीं, अलाउद्दीन खिलजी ने मलिक काफूर को एक बड़ी सेना देकर दक्षिण भारत जीतने के लिए भेजा। 1306 से 1315 ई0 तक इसने दक्षिण में भारत विनाश किया। ऐसी विकट परिस्थिति में हरिहर और बुक्का राय नामक दो वीर भाइयों ने 1336 में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की। इन दोनों को बलात् मुसलमान बना लिया गया था, पर माध्वाचार्य ने इन्हें वापस हिन्दू धर्म में लाकर विजयनगर साम्राज्य की स्थापना कराई। लगातार युद्धरत रहने के बाद भी यह राज्य विश्व के सर्वाधिक धनी और शक्तिशाली राज्यों में गिना जाता था। इस राज्य के सबसे प्रतापी राजा हुए कृष्णदेव राय। उनका राज्याभिषेक 8 अगस्त, 1509 को हुआ था। महाराजा कृष्णदेव राय हिन्दू परम्परा का पोषण करने वाले लोकप्रिय सम्राट थे। उन्होंने अपने राज्य में हिन्दू एकता को बढ़ावा दिया। वे स्वयं वैष्णव पन्थ को मानते थे, पर उनके राज्य में सब पन्थों के विद्वानों का आदर होता था। सबको अपने मत के अनुसार पूजा करने की छूट थी। उनके काल में भ्रमण करने आए विदेशी यात्रियों ने अपने वृत्तान्तों में विजयनगर साम्राज्य की भरपूर प्रशंसा की है। इनमें पुर्तगाली यात्री डोमिंगेज पेइज प्रमुख है। महाराजा कृष्णदेव राय ने अपने राज्य में आन्तरिक सुधारों को बढ़ावा दिया।

शासन व्यवस्था को सुदृढ़ बनाकर तथा राजस्व व्यवस्था में सुधार कर उन्होंने राज्य को आर्थिक दृष्टि से सबल और समर्थ बनाया। विदेशी और विधर्मी हमलावरों का संकट राज्य पर सदा बना रहता था, अतः उन्होंने एक विशाल और तीव्रगामी सेना का निर्माण किया। इसमें सात लाख पैदल, 22000 घुड़सवार और 651 हाथी थे। महाराजा कृष्णदेव राय को अपने शासनकाल में सबसे पहले बहमनी सुल्तान महमूद शाह के आक्रमण का सामना करना पड़ा। महमूद शाह ने इस युद्ध को 'जेहाद' कह कर सैनिकों में मजहबी उन्माद भर दिया, पर कृष्णदेव राय ने ऐसा भीषण हमला किया कि महमूद शाह और उसकी सेना सिर पर पांव रखकर भागी।

इसके बाद उन्होंने कृष्णा और तुंगभद्रा नदी के मध्य भाग पर अधिकार कर लिया। महाराजा की एक विशेषता यह थी कि उन्होंने अपने जीवन में लड़े गए हर युद्ध में विजय प्राप्त की। महमूद शाह की ओर से निश्चिन्त होकर राजा कृष्णदेव राय ने उड़ीसा राज्य को अपने प्रभाव क्षेत्र में लिया और वहां के शासक को अपना मित्र बना लिया। 1520 में उन्होंने बीजापुर पर आक्रमण कर सुल्तान यूसुफ आदिलशाह को बुरी तरह पराजित किया। उन्होंने गुलबर्गा के मजबूत किले को भी ध्वस्त कर आदिल शाह की कमर तोड़ दी। इन विजयों से सम्पूर्ण दक्षिण भारत में कृष्णदेव राय और हिन्दू धर्म के शौर्य की धाक जम गई। महाराजा के राज्य की सीमाएं पूर्व में विशाखापट्टनम, पश्चिम में कोंकण और दक्षिण में भारतीय प्रायद्वीप के अन्तिम छोर तक पहुंच गई थी। हिन्द महासागर में स्थित कुछ द्वीप भी उनका आधिपत्य स्वीकार करते थे।

राजा द्वारा लिखित 'आमुक्त माल्यदा' नामक तेलुगू ग्रन्थ प्रसिद्ध है। राज्य में सर्वत्र शान्ति एवं सुव्यवस्था के कारण व्यापार और कलाओं का वहां खूब विकास हुआ। उन्होंने विजयनगर में भव्य राम मंदिर तथा हजार मंदिर (हजार खम्भों वाले मंदिर) का निर्माण कराया। ऐसे वीर एवं न्यायप्रिय शासक को हम प्रतिदिन एकात्मता स्तोत्र में श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं। ❖

साभार: हर दिन पावन

भारत में मातृभाषा के तौर पर बोली जाती हैं 19,500 से अधिक भाषाएं

भारत में 19500 से अधिक भाषाएं या बोलियां मातृभाषा के तौर पर बोली जाती हैं। यह बात विगत मास में जारी जनगणना के ताजा विश्लेषण में कही गई है। इसमें कहा गया है कि ऐसी 121 भाषाएं है। जो भारत में 10 हजार या उससे अधिक लोग बोलते हैं। रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त, भारत ने बताया कि चूंकि एक घर में खून के रिश्ते से संबंधित या उससे बिना जुड़े या मिले-जुले लोग हो सकते हैं इसलिए हर व्यक्ति से उसकी मातृभाषा के बारे में पूछना बिल्कुल जरूरी है। ❖

मुस्लिम शिक्षिका ने उर्दू में लिख दी पूरी रामायण

सांप्रदायिक सौहार्द और भाईचारे की मिसाल पेश करते हुए एक मुस्लिम महिला ने उर्दू भाषा में रामायण लिख डाली है। यूपी के कानपुर की इस महिला ने प्रसिद्ध धर्मग्रन्थ रामायण को उर्दू में ट्रांसलेट किया है। लेखिका माही तलत सिद्दीकी का मकसद है कि हिंदू समुदाय के अलावा मुस्लिम समुदाय को भी रामायण की अच्छी बातों के बारे में पता चलें। माही ने कहा, 'रामायण को बहुत ही खूबसूरत तरीके से लिखा गया है। अन्य धर्मग्रन्थों के पवित्र शब्दों की तरह रामायण भी हमें शांति और भाईचारे का संदेश देती है।' ❖

नाटकों से फिल्मी दुनिया की ओर बढ़ते शिमला के धीरेंद्र

गेयटी थियेटर शिमला में अपने नाटकों से सबको हंसाने वाले कलाकार धीरेंद्र सिंह रावत अब स्टार भारत चैनल पर चल रहे धारावाहिक निमकी मुखिया में अपनी प्रतिभा के जलवे बिखेर रहे हैं। नाहर सिंह गैंग में शामिल धीरेंद्र नेगेटिव रोल में हैं। इस नाटक के बाद धीरेंद्र अब बाला साहेब ठाकरे पर बन रही फिल्म में भी नजर आएंगे। फिल्म में भी उन्हें नेगेटिव रोल मिला है। शिमला में थियेटर में करीब 14 साल कामे करने का अनुभव रखने वाले रावत लेखन और निर्देशन में भी हाथ आजमा चुके हैं। डेथ ऑफ ए सेल्समैन, पाखंड, फाइट ऑफ इनोसेंस, करवट, कफन, बलिदान, 36 रानियों का राजा जैसे नाटकों में मुख्य भूमिका निभा चुके हैं। चायल से स्कूली पढ़ाई पूरे करने वाले रावत राष्ट्रीय स्तर के पहलवान भी रह चुके हैं। रावत का कहना है कि थिएटर ने उन्हें नई पहचान दी है। जो युवा इस फील्ड में हैं, उन्हें शुरूआती संघर्ष के बाद सफलता जरूर मिलेगी। ❖

भारत की जीत में चमके अजय

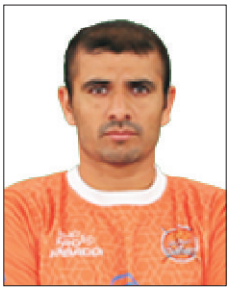

भारत को विश्व चैंपियन बनाने वाले अजय ठाकुर का दबदबा दुबई में मास्टर्स कबड्डी प्रतियोगिता में भी बरकरार रहा। प्रतियोगिता के छह मैचों में भारतीय कबड्डी टीम ने कोई मुकाबला नहीं हारा। कप्तान अजय ठाकुर ने सबसे ज्यादा अंक हासिल किए। अजय ने छह मुकाबलों में कुल 64 अंक हासिल किए। विदेशी धरती पर हिमाचल के अजय ठाकुर की अगुवाई में भारतीय कबड्डी टीम ने लगातार दूसरी प्रतियोगिता में जीत हासिल की है। प्रतियोगिता के दो मुकाबलों में अजय ने सुपर टेन भी हासिल किया। बातचीत में भारतीय कबड्डी कप्तान अजय ठाकुर ने कहा कि प्रतियोगिता में भी खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया है। ❖

जीवन को सार्थक कर चले गए संघ के वरिष्ठ प्रचारक डॉ. सत्यपाल

1 अगस्त 1924 को पंजाब के गुरदासपुर जिले की बटाला तहसील में जन्मे अपनी माता-पिता की दो संतानों में इकलौते पुत्र सत्यपाल कक्षा छठवीं में संघ के संपर्क में आए। माता धर्मपरायण स्त्री व पिता एक प्रसिद्ध वकील थे। अपनी संतान का लाड प्यार से लालन-पालन कर अच्छी शिक्षा देकर हर मां-बाप का सपना होता है कि बेटा परिवारिक दायित्व में उनका साथ निभाए। लेकिन इधर नियति को कुछ और ही मंजूर था उन्होंने संघ का प्रचारक बनना अपने जीवन का उद्देश्य बनाया और ध्येय था संघ कार्य। अत: ध्येय की पूर्ति हेतु उच्च शिक्षा पूर्ण कर 20 वर्ष की आयु में 1944 में संघ के प्रचारक बने और अपना संपूर्ण जीवन देश सेवा के लिए समर्पित कर दिया। डॉ. सत्यपाल एक परिवार में जन्म लेकर अनेकों परिवारों में संगठन की लौ प्रज्वलित कर एक सफल जीवन व्यतीत कर प्रभु के चरणों में सदा के लिए लीन हो गए। कांगड़ा के गुप्त गंगा यात्री निवास परिसर में डॉ. सत्यपाल जी की श्रद्धांजलि सभा में ये उद्‌गार इंद्रेश कुमार सदस्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल ने प्रकट किए। रामेश्वर दास क्षेत्रीय प्रचारक प्रमुख ने स्व. डॉ. सत्यपाल के बाल्यकाल के प्रेरक प्रसंग सुनाए। पूर्व मुख्यमंत्री व सांसद शांता कुमार ने कहा कि नृत्य और नृतक जब एक हो जाए तो पूर्णता या आदर्श की स्थिति होती है। ठीक इसी प्रकार स्व. डॉ. सत्यपाल ध्येय के साथ एकाकार हो गए थे। वे हमारे सच्चे पथ प्रदर्शक थे। श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु वरिष्ठ प्रचारक श्री प्रेमचंद गोयल, उत्तर क्षेत्र प्रचारक श्री बनवीर सिंह, महंत सूर्यनाथ, सांसद रामस्वरूप शर्मा, विद्या भारती के अखिल भारतीय मंत्री हेमचंद, राष्ट्र सेविका समिति की श्रीमती वन्दना योगी, नगर निगम शिमला की महापौर श्रीमती कुसुम सदरेट, हि.प्र. केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. कुलदीप अग्निहोत्री, पालमपुर कृषि विवि के कुलपति डॉ. एसके शर्मा, विभिन्न सामाजिक व राजनीतिक संगठनों के कार्यकर्ताओं सहित सम्पूर्ण हिमाचल प्रदेश से आए संघ के स्वयंसेवकों ने भी स्व. डॉ. सत्यपाल को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। ❖

अपराजेय पथिक रजनीश को स्मरणांजलि

अभी तो उसने पंख फैलाए थे उड़ने के लिए, समाज के लिए सपने बुनने लगा था पर नामुराद अस्पताल वालों ने उसे 22 जून 2018 को शांत घोषित कर दिया। उसकी शांति की खबर न जाने कितने लोगों को अशांत कर गई। साहित्यकार रामदरश मिश्र की पंक्तियां चरितार्थ होती हैं 'आज उस शख्स के लिए जिसे कुछ अलग और अनोखा करना था, वह भी सबसे अलग बनाया है मैंने ये घर धीरे- धीरे। खुले मेरे ख्वाबों के पर धीरे- धीरे, किसी को गिराया न खुद को उछाला। कटा जिंदगी का सफर धीरे-धीरे, पहाड़ों की कोई चुनौती नहीं थी। उठाता गया यूं ही सर धीरे- धीरे।' हिमाचल प्रदेश शिक्षक महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष रजनीश कुमार का जन्म 01 जनवरी 1966 को हुआ। इनके पिता रत्नचन्द जिसका प्रभाव रजनीश पर भी परिलक्षित हुआ। शाहपुर स्कूल से दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने पश्चात् 1988 ई0 में राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला से विज्ञान स्नातक की शिक्षा ली। वर्ष 2004 से 2015 तक यह संगठन के महामंत्री रहे। 2015 में इनको कुशल नेतृत्व के फलस्वरूप हिमाचल प्रदेश शिक्षक महासंघ का प्रदेशाध्यक्ष बनाया गया। प्रदेशाध्यक्ष रहते हुए इन्होंने शिक्षा जगत को स्वर्णिम आयाम प्रदान किए। दोस्तों के बीच गुरू नाम से मशहूर 'रजनीश' अपनी बेवाकी के लिए जाने जाते थे। उनके अभिन्न मित्र सुनील धीमान व डॉ0 जोगिन्द्र बताते हैं कि वह सदा सकारात्मक व नया करने को सोचते थे। ईश्वर से उन्हें कोई शिकायत नहीं रही। उसने अपना सब कुछ खो कर सब कुछ पा लिया है। स्व. रजनीश अपने पीछे पत्नी सरोज व दो पुत्र अनिकेतन और निशांत छोड़ गए हैं। इनका बड़ा बेटा अनिकेतन एमटेक व छोटा निशांत टांडा मेडिकल कॉलेज में पढ़ रहा है। ❖

हिमाचल प्रदेश की सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक पत्रिका

मातृवन्दना के 25 वर्ष तक लगातार सफल

प्रकाशन व प्रबन्धन के लिए व मातृवन्दना पत्रिका के

रजत जयन्ती वर्ष की मातृवन्दना संस्थान परिवार को

हार्दिक शुभकामनाऐं।

जारीकर्ता:

विजय नेगी

लोकप्रिय युवा नेता व कल्पा जिला परिषद् सदस्य

जिला किन्नौर, हि.प्र.

मो. 98168-71777

सपनों को पूरा करने की जंग

मीलिए ब्रेव डॉटर ऑफ इंडिया से। इस बेटी पर न केवल उसकी बहन को नाज है, बल्कि पूरे गांव, जिले, प्रदेश और देश भर को गर्व है। पीएम मोदी भी गर्व करेंगे। छोटी सी उम्र में इतना हौंसला, इतनी लगन देखकर आप इसे सलाम करेंगे। ये बहादुर बेटी हैं हरियाणा के यमुनानगर की। कहते हैं कि डूबते हुए को तिनके का सहारा होता है, लेकिन इस मासूम के पास न तो कोई सहारा है और न ही कोई उम्मीद। मां-बाप हैं नहीं, पर पढ़ना चाहती है, कुछ बनना चाहती है। इसलिए कूड़ा बीन कर रूपए जमा करती है और किताबें, ड्रेस खरीदकर स्कूल जाती हैं। आजाद नगर में रहने वाली आठ साल की मुस्कान (बदला हुआ नाम) जो सुबह स्कूल जाने से पहले एक घंटा गलियों में घूमकर कूड़ा बीनती है, फिर तैयार होकर स्कूल जाती है। स्कूल से घर लौटकर फिर से कूड़ा बीनने निकल जाती है। स्कूल से घर लौटकर फर से कूड़ा बीनने निकल जाती है। शाम को उसे बेचकर चंद रूपए कमाती है। रोजाना जरूरत के सामान पर खर्च करने के बाद बचे हुए पैसों को जमा करती है। इसी पैसे से पेन, पेंसिल, कॉपी और ड्रेस खरीद कर अपनी पढ़ाई पूरी करती है। मुस्कान मेहनत करके सफल होना चाहती है। हाल में चाइल्ड लाइन की निदेशिका अंजू वाजपेयी लड़की की काउंसिलिंग करने पहुंची, तो उसने कह किदया कि वह भीख नहीं मांगती। अपनी मर्जी से मेहनत करके अपना खर्चा निकाल रही है। जिस सरकारी स्कूल में वह पढ़ती है वहां के प्रिंसिपल व टीचर्स को भी इसका पता है।❖

तीन साल तक तोड़ा पहाड़ और बना दी नहर

ओडिशा के केंयुझर जिला में एक 70 साल के किसान ने अपने मेहनत के बल पर गांव के सैकड़ों लोगों के लिए करीब एक किलोमीटर लंबी नहर का निर्माण किया है। केंयुझर के बैतरणी गांव के रहने वाले इन 70 वर्षीय किसान का नाम दैत्री नायक है और वह यहां के आदिवासी समाज से आते हैं। बताया जा रहा है कि बैतरणी गांव में सिंचाई के लिए कोई इंतजाम न होने से किसानों को होने वाली परेशानी का समाधान करने के लिए दैत्री ने यहां खुद की मेहनत से करीब एक किलोमीटर लंबी नहर का निर्माण किया है, जिसके कारण अब गांव के लोगों को अपने जीवन और खेती के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध हो सका है। जानकारी के अनुसार केंयुझर जिले के बांसपाल, तेलकोई और हरिचंदपुर ब्लॉक में पिछले काफी समय से लोगों को पानी के अभाव में जीना पड़ता है। इस कारण कई बार पीने के पानी के अलावा खेती या अन्य किसी काम के लिए लोगों को पर्याप्त जल की व्यवस्था नहीं मिल पाती और इसी कारण यहां के किसानों को खेती के लिए सिर्फ बारिश के पानी पर ही निर्भर रहना पड़ता है। इस समस्या को देखते हुए ही दैत्री नायक ने कुछ समय पहले अपने गांव में पानी लाने के लिए एक प्रयास शुरू किया।❖

मंजिल

तू क्यों हुआ यूं दुखी उदास,
तेरी मंजिल तो है तेरे पास
तम चक्रव्यूहों में मुंह न छुपाना
राह के कांटों से तनिक न घबराना।
है गुरू तेरा ईश महान,
गुरू चरण कमल हैं सारे तीर्थ धाम
लाखों तफूां आते रहें
तू अडिग आगे बढ़ता रहे
टूटे पनघट पर लाखों घड़े
जीवन, मृत्यु चक्र निरंतर चले।
इन बातों से लेकर कुछ सीख
पहिये कर्मरूपी गाड़ी के घसीट।
मंजिल की ओर बढ़ता ही जाये
ऐसे इक दिन तू मंजिल को पाए
आधे खाली को बोल आधभरा
ऐसी सोच से जीवन हरा-भरा
साहस श्रम की जगा तो ज्योति
धर्म-संस्कृति है अनमोल मोती।
सच्चे मन से मांग लो आशीष
ईष्या त्याग करो अब रीस
असंभव शब्द नहीं तेरा शब्दकोश
बतियाले प्रकृति का ले आगोश।
ब्रह्मांड सारे तो तुमने मापा
बात-बात पर यूं न खो आपा
तुम कर सकते महापुरुषों के काम
मातृभूमि को शत्-शत् प्रणाम।
निस्वार्थ सेवा को बना लो नित नाम,
गीता-तुलसी संवारेगी बिगड़े काम।

रवि कुमार सांख्यान,
साहित्य कुटीर, बिलासपुर,

सिपाही

सुरक्षातंत्र का
वर्दीधारी हस्ताक्षर
ताकत-भरोसा-प्रकाश
अनुशासन में मिसाल
दुश्मन-हंतावीर है
युद्ध-यज्ञ में
अपनी आहूति देता
सिपाही वह धीर है।
स्वच्छता
अंदर की बाहर की
मोर्चा दर मोर्चा
सम्भालता है वह
चाहता क्या है?
साफ-सुथरा राष्ट्र
सिपाही वह कर्मवीर है?

मां

जिसे पुकारने पर भर जाता है मुंह
दु:ख दर्द हो जाते हैं दूर
सबके सबसारे जहां का मरहम है वह
मातृशक्ति है वह अनंत
नहीं प्यार-दुलार का अंत।
उसका आंचल है परवरिश का
शुभाशीर्वाद द्वार
जिसके पांव तले है जन्नत
जिसे परिभाषित करने के लिए
नहीं मिलते शब्द।
नहीं की जा सकती
उसके बिना
दुनिया की कल्पना
क्योंकि
मां, मां होती है।।

भीम सिंह परदेशी,
महादेव, सुन्दरनगर, मण्डी

सेब फल ही नहीं, किसानों बागवानों के लिए कामधेनु भी है

-मदन हिमाचली

हिमाचल प्रदेश के बागवानों के लिए सेब एक फल ही नहीं अपितु कामधेनु है आर्थिक तौर पर समृद्ध करने के लिए सदियों से पहाड़ों में रहने वाले किसान तरह-तरह के अन्न मक्की, गेहूं, कोदा, कांवणी, बाथू, आलु, अदरक जैसी फसलें उगाकर अपने जीवन का निर्वाह करते थे ये सभी खेती जैविक खेती कहलाती थी कछ अन्य फसलें जिनमें गोभी-मदर जैसी नकदी फसलों तक ही सीमित थी हिमाचल के पहाड़ों की खेती जैसे जैसे समय बदला लोगों के रहन सहन ओर खेती बाड़ी में भी भारी परिवर्तन आने लगा। देवभूमि हिमाचल के लोग सत्यानन्द स्टोक्स का नाम कभी भूला नहीं कसते क्योंकि इन्होंने अमेरिका से सेब के पौधे अटैची में डाक कर छुपाकर लाए थे और कोटगढ़ में सेब उगाए थे हिमाचल के लिए तो सत्यानन्द स्टोक्स एवं कोटगढ़- सेब के 'जनक' के रूप में जाने जाते हैं। 1918 में कोटगढ़ मेंसेब का बगीचा तैयार किया था। काफी वर्षों तक सेब गुमनामी के अन्धकार में रहा लेकिन धीरे-धीरे यह फल अब इलाकों के बागवानों की बंजर धरती का भी गहना बना।

काफी समय तक सत्यानन्द स्टोक्स ने अब किसानों को यद्यपि सेब उगाने की भनक तक नहीं लगने दी-लेकिन 1951 में जुब्बल के परोठी गांव के रामजीदास पांटा ने इन्हीं की प्रेरणा से सेब का बगीचा तैयार किया और 1952 में जुब्बल निवासी सूरत सिंह ठाकुर ने सेब का बगीचा बड़े स्तर पर तैयार करके अनेक बागवानों के प्रेरणा स्त्रोत बने। 1954 में जुब्बल के ही दुर्गानन्द टांटा ने बड़े स्तर पर सेब का बगीचा तैयार किया। बागवानों को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, कहीं सड़कों का अभाव तो कभी विपणन व्यवस्था की कभी-कभी बिचौलियों की हेरा-फेरी, कभी ट्रकों की कमी तो कभी लेबर ओर काम गिरों की कमी इन्हीं सभी हालातों से जूझते हुए बागवानों ने हार नहीं मानी, एक ओर जहां एशिया में 97 प्रतिशत सेब उठाया जाता था, वहां हिमाचल प्रदेश के सात जिले शिमला, कुल्लू, मण्डी, चम्बा, किन्नौर, लाहौल स्पिति, सिरमौर के ऊपरी इलाकों में सेब उगाकर बागवानी में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया, जो आज हिमाचल प्रदेश सरकार के लिए 11 हजार करोड़ रूपये की आय का साधन बना है। इतना ही नहीं लाखों लोगों जिनमें मजदूर, डिब्बा/ पेटी निर्माता, ट्रक एवं छोटे वाहनों के आपरेटरों सहित आय का साधन बना हुआ है।

आज हिमाचल प्रदेश को विश्व में सेब राज्य के रूप में जाना जाता है। किसानों के साथ साथ डा0 यशवन्त सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय का सेब की बागवानी के लिए महत्वपूर्ण योगदान रहा है। किसानों को प्रशिक्षण के साथ-साथ 40 से 60 हजार पौधे प्रतिवर्ष उपलब्ध करवाए जाते हैं तथा 5 हजार किसानों बागवानों को प्रतिवर्ष प्रशिक्षण दिया जाता है। यद्यपि सेब ने अनेक उतराव चढ़ाव के बाद भी हिमाचल के बागवानों को आर्थिक समृद्धि के शिखर पर पहुंचाया है। सेब हिमाचल के लिए 'कुबेर' सिद्ध हुआ है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। अभी और भी बागवानी में सम्भावनाएं समतल क्षेत्रों के लिए भी अनुसन्धान जारी हैं। वर्तमान परिवेश की यात्रा में हम सेब राज्य की ओर से फल राज्य की ओर अग्रसर हैं। ❖

समस्त प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं मातृवन्दना पत्रिका के रजत जयंती वर्ष की

हार्दिक शुभकामनाएं।

सीमा मेहता

पूर्व विधानसभा प्रत्याशी

एवम् अधिवक्ता

चौपाल

मो. 94594-49189, 98163-06003

हमारा भोजन कैसा हो?

दादा-दादी रात को अक्सर केवल खिचड़ी खाया करते थे। कई बार तो सिर्फ दूध या फल ही लेते थे। हमारे देश के अधिकतर हिस्सों में रात को ऐसे ही हलके खाने को सही माना जाता रहा है। रात को अच्छी नींद और शरीर को तरोताजा रखने के लिए जरूरी है कि रात का खाना हल्का-फुल्का हो। हम में से अधिकतर लोग रात के खाने के बाद टेलीविजन देखते हैं और फिर सो जाते हैं। हम कोई ऐसा काम नहीं करते जिससे हमारा शरीर ऊर्जा खर्च कर सके। नतीजा, रात को हम जो कुछ भी खाते हैं वह शरीर में चर्बी (फैट) के रूप में जमा हो जाता है। मायने यह कि हमारा रात का खाना जितना भारी होगा, उतनी अधिक चर्बी शरीर में जमा होगी। इसलिए अच्छी सेहत चाहते हैं तो ध्यान रखें कि नाश्ता राजा की तरह, दोपहर का खाना राजकुमार की तरह और रात्रि का भोजन रंक की तरह करना चाहिए। हल्के-फुल्के खाने का मतलब यह नहीं कि हम पोषण को भूल जाएं। पोषण के लिए सब्जियों, अनाज के रूप में कार्बोहाइड्रेट दालों खासकर मूंग के रूप में प्रोटीन का संतुलन आवश्यक है। इसके विपरीत भारी-भरकम रात्रि-भोजन से नींद प्रभावित होती है। तनाव बढ़ता, एकाग्रता कम होती है, भूख अधिक लगती है, रोगों से लड़ने की शक्ति कम होने लगती है और शरीर के कई आवश्यक काम प्रभावित होने लगते है। यह मोटापे का कारण भी बनता है। कई लोग ऐसे भी होते हैं जिन्हें रात को बहुत हल्का खाने के बाद नींद नहीं आती और वे फिर देर रात बिस्किट जैसे वस्तुओं पर धावा बोल देते हैं। ऐसा करना रात को भारी भोजन करने से भी अधिक हानिप्रद है।

सुबह का नाश्ता नहीं करने से हो सकता है मोटापा

क्या आप नियमित रूप से सुबह का नाश्ता करते हैं? अगर नहीं तो संभल जाएं। एक नए अध्ययन से आग्राह किया गा है कि ऐसी आदत के चलते मोटापे का खतरा बढ़ सकता है। अमेरिका के मेयो क्लीनिक के शोधकर्ताओं के अनुसार, यह निष्कर्ष 18 से 87 साल की उम्र के 347 लोगों पर किए गए अध्ययन के आधार पर निकाला गया है। उनके नाश्ते की आदत पर साल 2005 से 2017 तक नजर रखी गई थी। अध्ययन से पहले उनकी लंबाई, वजन और कमर की माप ली गई थी। अध्ययन में सुबह का नाश्ता नहीं करने वाले 26.7 फीसद प्रतिभागी मोटापे से पीड़ित पाए गए। जबकि नाश्ता नहीं करने वालों की कमर उन लोगों की तुलना में 9. 8 सेमी ज्यादा मोटी पाई गई जो बराबर नाश्ता करते थे।

भोजन कैसा व कितना?

आरोग्य रहने के लिए तुलसी- काव्य में आहार और विहार पर विशेष विचार किया गया है। आहार-विहार की उपेक्षा शारीरिक रोग के कारण हैं। भोजन क्या और कितना करना चाहिए, इसे सम्बन्ध में कहा गया है-

भोजन करिअ तृपिति हित लागी।
जिमि सो असन पचवै जठरागी।।

स्वस्थ कौन?

मन, बुद्धि और चित्त जिसका स्थिर है, ऐसा प्रसन्नत्मा व्यक्ति ही स्वस्थ है। ये सभी बातें अथवा विशेषताएं आचार धर्म के पालन से ही सम्भव है और यही स्वस्थ रहने की रामबाण दवा है। **साभार: त्रिकुटा संकल्प**

Dr. Hem Raj Sharma
Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU

RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi
"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"
JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre
Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

धारा 370 अलगाववादियों का यह 'सुरक्षा कवच' कब तक?

- नरेन्द्र सहगल

एक विशेष समुदाय के तुष्टीकरण के लिए भारत के संविधान में जबरदस्ती डाली गई धारा 370 भारत की राष्ट्रीयता, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र और संघीय ढांचे का मजाक उड़ा रही है। अब तो यह धारा प्रधानमंत्री के ध्येय वाक्य 'सब का साथ - सब का विकास' को भी चुनौती दे रही है। जम्मू-कश्मीर में सक्रिय सभी वर्गों का साथ भी नहीं मिल रहा और विकास भी एक विशेष समुदाय के प्रभावशाली लोगों का ही हो रहा है। वास्तव में संक्रमणकालीन, अस्थाई और एक विशेष उपबंध के रूप में जोड़ी गई यह धारा 370 कश्मीर घाटी को एक स्वतंत्र राष्ट्र बनने की प्रेरणा दे रही है। अलगाववाद को संवैधानिक मान्यता प्रदान करने वाली यह धारा आतंकवादियों का सुरक्षा कवच भी बन रही ही है।

सर्वविदित है कि जम्मू-कश्मीर के शासक महाराजा हरिसिंह ने 26 अक्टूबर 1947 को इस राज्य का भारत संघ में विलय करने करने के लिए 'विलय पत्र' पर हस्ताक्षर कर दिए थे और तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड माउंटबेटन ने 27 अक्टूबर को ही पूरे जम्मू-कश्मीर को भारत संघ का अभिन्न हिस्सा बना दिया था। दुर्भाग्यवश तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने मित्र कट्टरपंथी नेता शेख अब्दुल्ला को प्रदेश की सत्ता सौंप दी। शेख के कहने पर ये राष्ट्रघातक फैसला किया गया कि विलय पर अंतिम फैसला जम्मू-कश्मीर की विधानसभा करेगी। जब तक विधानसभा निर्णय नही देती तब तक के लिए अस्थाई व्यवस्था के रूप में भारतीय संविधान में धारा-370 जोड़ दी गई, परन्तु जब फरवरी 1956 में प्रदेश की विधानसभा ने जम्मू-कश्मीर के भारत में विलय को मान्यता दे दी तो भी इस अस्थाई धारा को हटाया नही गया। ध्यान दें कि संविधान सभा में इस धारा पर जमकर बहस हुई थी। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, डॉ. भीमराव अंबेडकर और सरदार पटेल जैसे अधिकांश नेताओं ने इसका विरोध करते हुए कहा था- ''इससे जम्मू-कश्मीर राज्य को भारत के साथ समरस करने में दिक्कतें खड़ी होंगी। यही धारा कश्मीर घाटी के लोगों में अलगाववाद के बीज बोएगी''। परिणाम सबके सामने है।

उल्लेखनीय है कि 80 के दशक में स्थापित वजीर कमीशन ने जम्मू-कश्मीर से संबंधित अनेक राजनीतिक सुधार करने के सुझाव दिए थे, परन्तु धारा-370 के कारण आज तक लागू नही हो सके। सच्चाई यह है कि अब तक देश का अरबों-खरबों रुपया कश्मीर के विकास और सुरक्षा के नाम पर खर्च हो चुका है। नतीजा सबके सामने है। अराष्ट्रीय तत्व सिर उठा कर खड़े हो गए। देशद्रोही तत्वों को भारत के विरोध में खुलकर दुष्प्रचार करने का मौका मिल गया। पाकिस्तानी तत्वों ने ऐसे अलगाववादी संगठनों की पीठ थपथपाई और कश्मीर के युवकों ने हथियार उठा लिए। चार लाख से भी ज्यादा हिन्दुओं को अपने घर, संपत्ति और देव देवालय छोड़कर अपने ही देश में दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर होना पड़ा। यह भी कितनी बड़ी विडम्बना है कि जिन लोगों ने विदेशी हमलावरों के आगे घुटने टेके, उनकी आक्रामक तहजीब को अपनाने के लिए अपना धर्म छोड़ा, अपने पूर्वजों की गौरवशाली संस्कृति कश्मीरियत को तिलांजलि दे दी और पाकिस्तान के पिठ्ठू बन गए, वे तो आज कश्मीर के मालिक बने बैठे हैं और जिन्होंने अपना धर्म/संस्कृति नही छोड़ी, अपनी सनातन कश्मीरियत के साथ जुड़े रहे वे कश्मीरी पंडित अपने घरों से खदेड़ दिए गए। धारा-370 का यह सबसे बड़ा दुष्परिणाम है।

वैसे भी धारा-370 का औचित्य अब समाप्त हो गया है, अधिकांश कश्मीरियों के भारत के खिलाफ खुली बगावत पर उतर आने और भारत की सेना के साथ छापामार युद्ध शुरु हो जाने के बाद अब इस धारा का कोई अर्थ समझ में नही आता। अब तो देश की अखंडता, सुरक्षा और सनातन कश्मीरियत/स्वाभिमान को बचाना महत्वपूर्ण हो गया है। राज्यपाल शासन के दौरान यह कार्य किया जा सकता है। आज केन्द्र की सरकार उन लोगों के हाथ में है जो प्रारम्भ से ही धारा-370 को बनाए रखने का विरोध करते आ रहे हैं। यह भी ध्यान रखें कि मात्र राज्यपाल शासन की घोषणा से काम नही होने वाला प्रबल राजनीतिक इच्छाशक्ति और तुरन्त निर्णय लेने की इस समय आवश्यकता है। अत: धारा 370 के सभी अवरोधों को हटाकर प्रबल सैनिक अभियान के साथ देशद्रोहियों को पूर्णत: समाप्त करना यह अब समय की जरूरत है।❖

पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका

आज विकास की अंधी दौड़ में मानव सब कुछ भूल कर बस पैसा कमाने में लगा है। इसका विपरीत असर प्रकृति पर पड़ा है। हर तरफ प्रदूषण में अहम भूमिका निभाते हैं। अगर हम बात करें महिलाओं व पुरूषों की तो महिलांए अधिक संवेदनशील होती हैं। फिर चाहे वह परिवार पालना हो या पर्यावरण संरक्षण। चिपको आंदोलन में वो महिलाएं ही थीं जो पेड़ों से चिपक गई थीं व अपनी जान गवां दी थी। नवधान्य व ग्रीन बेल्ट को शुरू करने वाली, साइलेंट स्प्रिंग व रेड डाटा बुक पर काम करने वाली भी महिलाएं ही थी। आम जन-जीवन में भी महिलांए अहम भूमिका निभा सकती हैं:-

1 बच्चों को सफाई की आदत के साथ-साथ कूड़ा-कचरा कूड़ेदान में ही डालने की आदत डालें।
2 बच्च्चों को समझाएं कि पौधों व पर्यावरण को संरक्षित करना उनकी भी जिम्मेदारी है।
3 ब्रश करते, नहाते, बर्तन व कपड़े धोते समय पानी बर्बाद न करें व पानी बचाने के सभी उपाय बच्चों को समझाएं।
4 खाना व पानी की आदत जरूरत के हिसाब से लेने के प्रोत्साहित करें।
5 पालन-पोषण इस तरह से हो की प्रकृति के निकट रहने की आदत पड़े।
6 बच्चों को होड़ व दिखावे से दूर रह कर भी पर्यावरण को संरक्षित किया जा सकता है।
7 जरूरतों को सीमित रखने से कम सामान खरीदना पड़ेगा जिससे उद्योगों द्वारा होने वाले प्रदूषण को कम किया जा सकता है।
8 वस्तुओं का पुनः चक्रण करना भी सिखाएं। इससे कागज, कांच, लोहा, प्लास्टिक व पॉलीथीन को दोबारा प्रयोग किया जा सकता है।
9 खेती-बाड़ी में सिंचाई की विभिन्न नई तकनीक अपना कर भी जल को संरक्षित किया जा सकता है।
10 विभिन्न त्यौहारों जैसे-होली, दिवाली व दशहरा आदि पर भी सीमित मात्रा में पटाखे व रंगों का प्रयोग कर प्रदूषण कम किया जा सकता है।
11 किसी भी कार्यक्रम व उत्सव में पौधे लगाकर पर्यावरण को स्वच्छ बनाया जा सकता है। ❖

विदेशों में गूंजी शिल्पा की आवाज

सोलन की शिल्पा जोशी की आवाज का जादू बॉलीवुड के बाद अब विदेशों में चला है। मुंबई के बाद हिमाचल की बेटी इंडोनेशिया, सिंगापुर, मालदीव में भी आवाज का जादू बिखेर रही हैं। कुनिहार के हाटकोट की शिल्पा जोशी ने गायकी के शौक को पूरा करने के लिए एयर हॉस्टेस की नौकरी छोड़ दी थी। शिल्पा को मायानगरी में काम करते हुए एक साल हो गया है। मिले हो तुम गीत से बॉलीवुड में पहचान बनाने के बाद जोशी पर जी म्यूजिक के बैनर तले फिल्माए गए पहला प्यार गीत से कामयाबी की बुलंदियों को छू लिया। इसके बाद ब्राउनी कुड़ी, पंजाबी एलबम हॉस्टल सहित कई एलबम में काम कर नाम कमा चुकी हैं। इंडोनेशिया, सिंगापुर और मालदीव में शो कर सुर्खियां बटोर चुकी हैं। शिल्पा ने बातचीत में बताया कि वे अपनी कामयाबी का श्रेय पिता राजेंद्र जोशी और बड़ी बहन शिप्रा जोशी को देती हैं। ❖

समस्त प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं
मातृवन्दना पत्रिका के रजत जयंती वर्ष की
हार्दिक शुभकामनाएं।

भावानगर कॉन्ट्रेक्टर यूनियन

जिला किन्नौर (हि.प्र.)

अध्यक्ष

भूपेन्द्र नेगी

मो. 98168-72378, 82198-77714

सचिव

दिलबाग सिंह नेगी

मो. 98166-42615

उपाध्यक्ष
विक्रम जिन्टू

कोषाध्यक्ष
दौलत राम नेगी

कार्यकारिणी सदस्य

सृजन सिंह नेगी | यशोदा नेगी | करतार सिंह नेगी

महिन्द्र नेगी | अमृत लाल नेगी

समस्त प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं
मातृवन्दना पत्रिका के रजत जयंती वर्ष की
हार्दिक शुभकामनाएं।

Mob. : 94180-25740
94594-30009

Gopal Singh

GOVT. CONTRACTOR & GEN ORDER SUPPLIERS

Office : SCO 107, Indira Market, Mandi (H.P.)-175001
Resi. : H.No. 33/3, Jail Road, Mandi (H. P.)
E-mail : gkconstruction96@gmail.com

With Best Compliments from:

Himalayan Public School
+
Him Institute of Teacher Education (B.Ed.) College

Ponds Kinnaur

Residential and Day Boarding Co-Educational School

Admission Open

Nursery to +2 Science

Infrastructure:

- Well furnished laboratories
- Music Room/Computer labs
- Big Ground for outdoor games
- Indoor games hall
- Well furnished library

Activities:

- Poem Recitation
- Model Making
- Children Science Congress
- Quiz Competition
- Instrumental Music
- Painting, Declamation
- Yoga

EXTRA COACHING FREE

4th & 5th Classes for Entrance Test
JNV, Sainik & Eklavya School
9th to +2 JEE, NEET & NDA

CCTV Enabled Secured Campus

Creche (Day Care), Nursery, KG, Playway
9th to +2 Science Medical/Non-Medical
1 Hour FREE Coaching
(JEE, NEET, IIT & NDA)

Hostel for 1st to +2

Contact for more details

70181-90768, 88941-90768

समस्त प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं
मातृवन्दना पत्रिका के रजत जयंती वर्ष की
हार्दिक शुभकामनाएं।

RSNRS

Rattan Singh Neja Ram & Sons

V.P.O. Reckong Peo, Tehsil Kalpa, Distt. Kinnaur (H.P.)
Email: mohanneg6969@gmail.com

Autorised Distributor:

SAMSUNG

Mob.: 98165-00069, 98166-00069, 98167-00069

RSNR

Rattan Singh Neja Ram

Autorised Distributor:

V.P.O. Reckong Peo, Tehsil Kalpa, Distt. Kinnaur (H.P.)
Email: mohanneg6969@gmail.com

Mob.: 98162-00069, 98163-00069, 98165-00069, 98166-00069

*RBI गवर्नर रहे वाई.वी. रेड्डी की पुस्तक ADVISE AND DISSENT से साभार'

सिर्फ 40 करोड़ रुपए के लिए हमे अपना 47 टन सोना गिरवी रखना पड़ा था, ये स्थिति थी इकॉनमी की।

मुझे याद है नब्बे के शुरुआती दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था को वो दिन भी देखना पड़ा जब भारत जैसे देश को भी अपना सोना विश्व बैंक में गिरवी रखना पड़ा था ..... ये वो दौर था जब तबके प्रधानमंत्री राजीव गाँधी की हत्या लिट्टे के आतंकियों ने कर दी थी..और युवा तुर्क कहे जाने वाले चन्द्रशेखर तब नए नए प्रधानमंत्री बने थे....

पूरे देश में एक तरह का निराशा भरा माहौल था ..कोई रोज़गार नहीं, कोई नया उद्योग धन्धा नही, ...एक बिजनेस डालने जाओ तो पचास जगह से दवाब लेकर आना पड़ता था।....लाइसेंस परमिट के उस दौर में चारो तरफ बेरोज़गारी और हताशा का अलाम था.....दूसरी तरफ देश में मंडल और कमंडल की लड़ाई छेड़ी हुई थी।

अस्सी से नब्बे के दशक तक देश में कांग्रेस ने राज किया था। .उसी दौरान बोफोर्स तोपों में दलाली का मामला सामने आया। गाँधी परिवार की अथाह लूट ने देश की अर्थ व्यवस्था को रसातल में पंहुचा दिया। उन दिनों भारत का विदेशी मुद्रा भंडार इतना कम हो गया था कि रिजर्व बैंक ऑफ़ इंडिया ने अपना सोना विश्व बैंको में गिरवी रखने का फैसला किया। हालात ये हो गए थे कि देश के पास तब केवल 15 दिनों का आयात करने लायक ही पैसा था। स्थिति कितनी भयानक थी इसका अंदाजा आप इस बात से लगा लीजिये की भारत के पास तब केवल 1.1 अरब डालर का ही विदेशी मुद्रा भंडार बचा हुआ था।

तब तत्कालीन प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर के आदेश से भारत ने 47 टन सोना बैंक ऑफ़ इंग्लैंड में गिरवी रखा था। ये भी अपने तरह की एक दिलचस्प और भारतीय जनमानस को शर्मसार करने वाली घटना थी। हुआ यह कि RBI को बैंक आफ़ इंग्लैंड में 47 टन सोना पहुंचना था। ये वो दौर था जब मोबाइल तो होते नहीं थे और लैंडलाइन भी बहुत सीमित मात्रा में हुआ करते थे। नयी दिल्ली स्थित RBI की बिल्डिंग से 47 टन सोना नयी दिल्ली एयर पोर्ट पर एक वैन द्वारा पहुंचाया जाना था वहां से ये सोना इंग्लैंड जाने वाले जहाजों पर लादा जाना था ...लेकिन नब्बे के दशक में भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था कितनी लचर स्थिति में थी इसका अंदाजा आप इस बात से लगा लीजिये की 47 टन सोना लेकर जो वैन महज़ 6 सुरक्षा गाड्र्स के साथ एयर पोर्ट पर भेजी गयी थीं उसके चारों टायर आधे रास्ते में ही पंचर हो गए .....टायर पंचर होते ही उन 6 सुरक्षा गाड्र्स ने उस 47 टन सोने से भरी वैन को घेर लिया .....बड़ी मशक्कत के बाद ये 47 टन सोना इंग्लैंड पहुचाया गया और तब जाकर ब्रिटेन ने भारत को 40.05 करोड़ रुपये कर्ज़ दिया। इस घटना का वर्णन तबके RBI गवर्नर रहे वाईवी रेड्डी ने अपनी पुस्तक ADVISE AND DECENT में किया है। ❖

With best compliments from

SHIVALIK HOSPITAL

Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)

Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma

MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma

MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

विनम्रता- दूसरों को छोटा न समझें

एक बार की बात है एक संत थे, वे अक्सर यात्रा पर रहते थे और उनका नियम था कि वे ऐसे ही लोगों के घर आश्रय लेते थे, जिनका आचार-विचार अच्छा हो और घर पवित्र हो। इस बार उन्होंने वृन्दावन जाने का सोचा लेकिन पहुँचने से पहले ही जब वो कुछ मील की दूरी पर थे तब रात हो चुकी थी। तो उन्होंने सोचा जिस रास्ते पर चल रहे थे उसे गांव में रात बिता लेता हूं और सबेरे जल्दी उठकर फिर से अपनी यात्रा को शुरू कर दूंगा।

अब अपने नियम अनुसार उनको ऐसा घर खोजना था जो उनके रहने लायक हो। उन्होंने इस बारे में कुछ लोगों से पूछताछ की तो किसी ने उन्हें बताया कि ब्रज के पास वाले गाँव के सभी लोग धार्मिक हैं व कृष्ण के परम भक्त हैं। संत उस गाँव गए और एक व्यक्ति के घर का द्वार खटखटाया और कहा भाई मैं थोडा विश्राम करना चाहता हूँ तो क्या मैं आपके घर रात बिता सकता हूँ? लेकिन मेरा एक नियम है कि मैं केवल उसी के घर का भोजन और पानी ग्रहण करता हूँ जिसके घर का आचार-विचार शुद्ध हो। इस पर उस व्यक्ति ने कहा-' महाराज माफ़ कीजिये मैं तो इस गांव का तुच्छ सा इंसान हूं। लेकिन इस गांव के सभी लोग मुझसे कहीं ज्यादा पवित्र है। फिर भी यदि आप मेरे घर में रुकेंगे तो मै खुद को भाग्यशाली मानूंगा।'

इस पर संत कुछ नहीं बोले और आगे बढ़ गये, आगे जाकर एक और व्यक्ति से उन्होंने रात बिताने के लिए विनती की। तो इस दूसरे व्यक्ति ने कहा-' महाराज मैं खुद को इतना पवित्र नही मानता जितना इस गांव के बाकी सभी लोग हैं। फिर भी यदि आप मेरे घर में रुकेंगे तो मुझे बहुत खूशी होगी।' संत फिर बिना कुछ बोले आगे बढ़ गए। अब आगे जिसके भी घर गए सभी ने लगभग यही बात बोली। अब संत को अपनी खुद ही सोच पर लज्जा महसूस होने लगी कि वो एक संत होकर, दूसरों को छोटा समझने की इतनी छोटी सोच रखते हैं। जबकि एक आम आदमी जो गृहस्थ है वो अपने परिवार की जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी कितना उत्तम आचरण लिए हुए हैं कि खुद को गांव का सबसे छोटा बता रहा है और दूसरे सभी को खुद से बेहतर! अब वे सबसे पहले वाले आदमी के पास गये और उससे कहा माफ़ कीजिये, मुझे लगता है इस गांव का हर एक आदमी पवित्र है लेकिन मैं आपके घर रुकना चाहूंगा।

कठिनाई से बाहर आने का रास्ता

एक किसान था, वह अपने खेतों में काम कर घर लौट रहा था। रास्ते में ही एक हलवाई की दुकान थी। उस दिन किसान ने कुछ ज्यादा काम कर लिया था और उसे भूख भी बहुत लग रही थी। ऐसे में जब वह हलवाई की दुकान के पास से गुजरा तो उसे मिठाइयों की खुशबू आने लगी। वह वहां खुद को रोके बिना नही रह पाया। लेकिन उस दिन उसके पास ज्यादा पैसे नही थे, ऐसे में वह मिठाई खरीद नहीं सकता था, तब वह कुछ देर वहीं खड़े होकर मिठाइयों की सुगंध का आनंद लेने लगा।

जब मिठाई वाले ने किसान को मजे से उसकी दुकान की मिठाइयों की खूशबू का आनंद लेते देखा, तब उससे किसान की खुशी देखी नहीं गई, वह किसान के पास गया और बोला, पैसे निकालो। किसान हैरान हुआ और बोला कि मैंने तो मिठाई नहीं खरीदी और न ही चखी है फिर पैसे किस बात के? हलवाई बोला, भले ही तुमने मिठाई नहीं ली हो, लेकिन मेरी बनाई मिठाई की खुशबू का आनंद तो लिया है।

किसान बोला, मिठाई की खुशबू लेना मिठाई खाने के बराबर ही है तो तुम्हें अब इसके पैसे देने होंगे। किसान पहले थोड़ा घबराया, लेकिन फिर थोड़ी सूझ-बूझ दिखाते हुए उसने अपनी जेब से कुछ सिक्के निकाले और उन्हें दोनों हाथों के बीच में डालकर खनकाया। अब खनकाने के बाद किसान अपने रास्ते जाने लगा।

हलवाई बोला, मेरे पैसे तो दो! किसान ने कहा, जैसे मिठाई की खुशबू का आनंद लेने मिठाई खाने के बराबर ही है, वैसे ही सिक्कों की खनक सुनना भी पैसे लेने के बराबर ही है। तो बच्चों, कई बार आपको जीवन में इस हलवाई के जैसे लोग भी मिल जाएंगे, ऐसे में आप घबराएं नही। सूझ-बूझ से इन्हें जवाब दें और समस्या से इस किसान की तरह ही बाहर निकल जाएं।

पेड़ का दर्द

क्यों काट रहे हो मुझे
बड़ा दर्द होता।
मत काटो मुझे इतना
जितना मैं सह न सकूं
मेरे बिन तू अधूरा है
तू मुझसे बहुत ही जुड़ा है
मत बन इतना बेशरम
मैं तुझे फल फूल देता हूं
पिता की तरह छाया दी तुझे
मात की तरह झुलाया है
सर्दी हो या गर्मी
मैंने हमेशा तुझे सहलाया है

-सृष्टि, 7वीं कक्षा, स्वर्ण पब्लिक स्कूल, शिमला

प्रश्नोत्तरी

1. फीफा विश्व कप 2018 का विजेता कौन है?
2. प्रदेश में अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या सबसे कम किस जिले में है?
3. हिमाचल प्रदेश में सबसे अधिक आबाद गांव वाला जिला कौन सा है?
4. हिमाचल प्रदेश में सबसे कम जनसंख्या घनत्व वाला जिला कौन सा है?
5. हिमाचल प्रदेश सरकार का प्रथम राज्य पत्र कौन सा है?
6. हिमाचल प्रदेश का प्रथम रेलवे स्टेशन किस स्थान पर स्थापित किया गया था?
7. भारतीय वन अनुसंधान केन्द्र कहां स्थित है?
8. गुगली शब्द किस खेल से संबंधित है?
9. यूएनओ का मुख्यालय कहां स्थित है?
10. हिमाचल प्रदेश के लाहौल स्पीति जिले का मुख्यालय कहां पर है?

उत्तर अगले अंक में...

पहेली

1. सिर छोटा और पेट बड़ा
तीन टांग पर आ रहे ए खड़ा।
खाता हवा और पीता तेल
फिर दिखलाता अपना खेल।

2. खाना कभी नही खाता वह,
और न पीता पानी।
उसकी बुद्धि के आगे तो,
हार माने हर ज्ञानी।

3.पानी से में पैदा होता,
उजला मेरा रंग।
स्वाद बढ़ाता घुलमिल
करके मैं भोजन के संग।

4 . खिलाड़ियों का महाकुंभ यह कहलाता,
चार वर्षों के अंतराल से यह आता।

5. काला है पर काग नही,
कहें नाग पर सांप नही।
एक हाथ पर पैर चार,
बतलाओ न कर सोच-विचार।

1.स्टोव, 2. कंप्यूटर, 3. नमक, 4. ओलम्पिक खेल, 5. हाथी

चुटकुले

1. पति शाम को बहुत उदास होकर घर लौटा,
पत्नी-क्या हुआ जी ?
पति- आज हमारे ऑफिस की बिल्डिंग गिर गयी
सारे लोग मर गये
पत्नी- तो आप कैसे बचे ?
पति- मैं सिगरेट पीने बाहर गया हुआ था ना ?
पत्नी-चलो शुक्र है भगवान का।
थोड़ी देर में ही टीवी पर खबर आने लगी कि सरकार ने सभी मृतकों के परिवार वालों को 1 -1 करोड़ रुपये देने का फैसला किया है।
पत्नी गुस्से में-ना जाने तुम्हारी ये सिगरेट की आदत कब छूटेगी।

2. एक लड़के को लड़की वाले शादी के लिए देखने आ रहे थे।
पिताजी- बेटा! लड़की वालों के सामने लम्बी-लम्बी फेंकना लड़की वालों के आते ही।
बेटा-पापा जरा चाभी देना
वो ट्रेन धूप में खड़ी है, अंदर कर देता हूँ।

3. ट्रक के पीछे लिखी शायरी
पप्पू ट्रक ड्राइवर से बोला-क्या तुम भगत सिंह को जानते हो?
ड्राइवर-नही।
पप्पू- क्या तुम सुभाष चन्द्र बोस को जानते हो ?
ड्राइवर- नही तो!
पप्पू- क्या तुम चन्द्रशेखर आज़ाद को जानते हो ?
ड्राइवर- नहीं तो!
पप्पू- तो फिर ट्रक के पीछे ये क्यूँ लिखा है-शहीदों को नमन
ड्राईवर- अरे ये तो उन लोगों के लिए लिखा है
जो इस ट्रक के नीचे आ के मरे हैं।

गेयटी थियेटर में विशेषांक विमोचन कार्यक्रम की झलकियाँ

अतिथियों द्वारा विशेषांक विमोचन

विशेषांक की जानकारी देते हुए सम्पादक

कार्यक्रम अध्यक्ष पी.के. सूद अपना अध्यक्षीय भाषण देते हुए

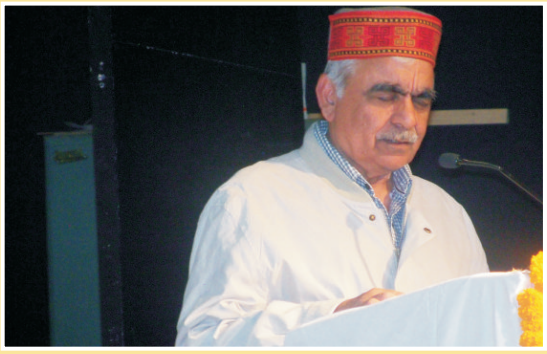

मुख्य अतिथि अशोक मलिक रेज़िडेन्ट एडिटर (सेनि.) अपना वक्तव्य देते हुए

कार्यक्रम की शोभा बढ़ाते हुए सम्पूर्ण प्रदेश से आए अतिथि एवं शिमला शहर के गणमान्यजन

HP/48/SML (upto 31-12-2017) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः

S.O.S

1.5T MRI CENTER

ऊना, हमीरपुर, बिलासपुर व नंगल
में पहली 1.5 T MRI मशीन

> बेहतर तकनीक, बेहतर क्वालिटी
> नवीनतम उपकरण युक्त लेबोरेटरी

OPEN 24 HOURS

हमें विश्वास है
बेहतर आपका अधिकार है।

क्षेत्र की पहली 1.5T MRI

सामने क्षेत्रीय हस्पताल, ऊना
88940-71212

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।

हमें सम्पर्क करें YouTube